

पूर्वांशा

अंक
31

वर्ष : 2021-22



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
मेघालय, शिलांग - 793 001.



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, दिनांक : 03 दिसम्बर, 2021 को मेघालय के माननीय राज्यपाल, श्री सत्य पाल मलिक से भेंट करती हुई।



मेघालय के माननीय राज्यपाल, श्री सत्य पाल मलिक के करकमलों द्वारा दिनांक : 03 दिसम्बर, 2021 को उपहार प्राप्त करती हुई श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



सत्यमेव जयते

पूर्वाशा परिवार

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग - 793 001.



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



संरक्षक

श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
मेघालय, शिलांग - 793 001.



संपादक

श्री सागर विजय काळे
उप महालेखाकार (ए.एम.जी. - १ एवं ३)

सम्पादन सहयोग

**अंक
31**

**वर्ष
2021-22**



श्री एल. सिमते
हिन्दी अधिकारी



मुहम्मद जियाऊल हक
वरिष्ठ अनुवादक



श्री सोनु कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

प्रकाशन सम्पर्क सूत्र : कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) मेघालय, शिलांग - 793 001.

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता एवं उनमें व्यक्त विचारों के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए पूर्वाशा परिवार, संपादक एवं प्रबंधकीय मंडल का किसी प्रकार से कोई उत्तरदायी नहीं है। निःशुल्क व आंतरिक वितरण हेतु मुद्रित व प्रकाशित।

मुद्रण एवं पत्रिका डिजाइन : अंजनी प्रकाशन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल, मो. 8820127806, ई-मेल : anjaniprakashan19@gmail.com



भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरन्तर प्रयासरत)



राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केन्द्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरन्तर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाए रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे। अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए, अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिन्दी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरन्तर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिन्द !

हर राष्ट्र के पास अपना चिन्तन होता है, अपनी भावनाएं होती हैं जिसे वह अपनी भाषा में व्यक्त करता है। मैं, यह मानता हूँ कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, बल्कि उससे बोलने वालों की संस्कृति और संस्कार भी उससे जुड़े होते हैं। भाषा जहाँ अपनी संस्कृति विरासत से उपजी हुई होती है, वहीं वह इस विरासत को आगे आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाती भी है। इसलिए भाषा का प्रश्न केवल एक अभिव्यक्ति के माध्यम का प्रश्न नहीं है बल्कि, यह हमारी सांस्कृतिक विरासत और हमारे देश के लोगों के संस्कार से भी जुड़ा है। फिर लोकतंत्रात्मक शासन पद्धति में तो भाषा का प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि जनता तभी कामकाज में सक्रिय रूप से भाग ले सकती है, जबकि राजकाज ऐसी भाषा में हो, जिसे वहाँ की जनता अच्छी तरह से समझ सकें।

— डॉ. शंकर दयाल शर्मा



"राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।" — महात्मा गांधी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की वार्षिक गृह पत्रिका



हिंदी दिवस 2022

के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश



राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम-काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13-14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस-2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठरथ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए 'लीला हिंदी प्रवाह' मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी-अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई-महाशब्दकोश' में 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई-सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी 'बृहत शब्दकोश' के निर्माण पर भी काम शुरू किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द-संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश-विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

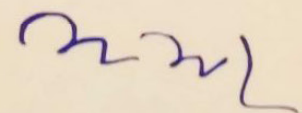
आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022


(अमित शाह)

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव



अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	पूर्वाशा परिवार		3
2	राजभाषा प्रतिज्ञा		4
3	हिन्दी दिवस 2022 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री जी का संदेश		5-8
3	महालेखाकार का संदेश	श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब	10
4	सम्पादकीय	श्री सागर विजय काळे	11
5	समाचार-पत्र कतरन		12-13
6	कैसे बनाएं कार्यालय में अपनी बेहतर छवि	मुहम्मद जियाऊल हक	20-22
7	सफलता का रहस्य	श्रीमती मीरा देवी	23
8	नोहकलिकाई फॉल्स का नाम कैसे पड़ा ?	श्री बिनोद भुजेल	24-25
9	ई-ऑफिस – फाइल प्रबंधन प्रणाली का भविष्य	श्री रीतेश कुमार	26-27
10	बाढ़	श्रीमती रोज बेगम	28-30
11	हिन्दी की लोकप्रियता	श्रीमती मधु कुमारी गुप्ता	31
12	नई पीढ़ी में धैर्य एवं सहनशीलता का अभाव	श्री बिनोद कुमार	32-33
13	मनुष्य वर्णों एवं वर्गों में	श्री सोनु कुमार साव	34-35
14	जिम की लोकप्रियता	श्रीमती मधु कुमारी गुप्ता	36-37
15	प्लास्टिक वरदान या अभिशाप	सुश्री शाहनाज बेगम	38-39
16	मीडिया के शिकंजे में फंसे बच्चे	श्रीमती तारा देवी सुनार	40-41
17	चार फुंदनों वाली टोपी	सुश्री अमृता दास	42
18	भारत की सामाजिक समस्याएँ	श्रीमती मुमताज बेगम	43
19	धोनी का टिकट कलेक्टर से देश की धड़कन बनने तक का सफर	श्री राजेन्द्र प्रसाद	44-45
20	परिस्थितियाँ और विचार	श्री सुमित कुमार वर्मा	46
21	हवा और सूरज	श्रीमती अपर्णा रानी दास	47
22	सफेद गुलाब का गुलदस्ता	श्रीमती लेविस नामप्ली	48-49
23	गीत नफरत का हमने कभी कोई गाया नहीं	श्री दीपक कुमार	58
24	रिमझिम बरस रहा है पानी	श्री सुमित दास	59
25	एक पल भी गंवा	सुश्री साधना कुमारी	59
26	औरत के हिस्से में इतवार नहीं आती	मुहम्मद अरिफुल हक	60
27	जमीन पर जन्नत (माँ)	श्री सुजीत कुमार दास	61
28	पर्यावरण संरक्षण	श्री अमित कुमार वर्मण	62
29	एक कविता मेरे देश के नाम	श्रीमती एल. थिएते	63
30	मीडिया	श्री सुखदेव प्रसाद साव	64
31	बाजारू	श्री पवन कुमार	65
32	वर्ष 2021 के हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता		69
33	हिन्दी दिवस 2021 : एक संक्षिप्त विवरण		70
34	हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह 2021 : एक संक्षिप्त विवरण		71
35	दिन-प्रतिदिन के कार्य निर्वाहन में प्रचलित वाक्यांश		72
36	कार्यालय से सेवा निवृत्त एवं स्वर्गीय कर्मचारियों का विवरण		73
37	कार्यालय महालेखाकार द्वारा आयोजित विविध गतिविधियों की झलकियाँ (पृष्ठ संख्या : 2, 14-19, 50-57, 66-68 & 74-75)		



संदेश



शेफाली एस. अंदलीब

महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
मेघालय, शिलांग - 793 001.



मुझे हर्ष है कि पिछले वर्ष की तरह, इस वर्ष भी कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग की वार्षिक हिन्दी पत्रिका “पूर्वाशा” का 31वां अंक ई-पत्रिका के स्वरूप में प्रकाशित हो रहा है। ई-पत्रिका प्रकाशन जैसे महत्वपूर्ण कदम से न केवल हमने कागजी प्रतियों के छापने की लागत में कमी की है, यह कदम इस पत्रिका को विभाग में हमारी वेबसाइट एवं ईमेल के द्वारा प्रसारित करने में भी लाभकारी होगा। मुझे आशा है कि “पूर्वाशा” के पाठक इस अंक में शामिल लेखों एवं रचनाओं का आनंद लेंगे।

हिन्दी एक सहज-सरल एवं सुबोध भाषा है। एक ओर जहाँ राजभाषा की सहजता एवं सुगमता के कारण हिन्दी आम लोगों में लोकप्रिय और कार्यालय के दैनिक उपयोग में काम आने वाली भाषा है, वहीं दूसरी ओर देश को एक सूत्र में पिरोये रखने का काम भी इसी के द्वारा किया जाता है। हिन्दीतर भाषी क्षेत्र में हिन्दी ई-पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अथक प्रयास से संभव हो पाया है। राजभाषा के उत्थान में हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

“पूर्वाशा” के माध्यम से हमारा निरन्तर प्रयास बना रहेगा कि पूर्वोत्तर सहित पूरे राष्ट्र में हिन्दी का उत्तरोत्तर विकास होता रहे तथा हिन्दी के प्रति सभी अपनी निष्ठा बनाए रखें। अतः मैं, पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सबको बधाई देती हूँ तथा सम्पादकीय मंडल एवं हिन्दी स्टाफ को उनके अथक प्रयास एवं उत्साह के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

पत्रिका की सफलता की शुभकामनाओं सहित।

शेफाली एस. अंदलीब



"भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिन्दी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।" – अमित शाह (गृह मंत्री)

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की वार्षिक गृह पत्रिका



सम्पादकीय



सागर विजय काळे

उप महालेखाकार (ए.एम.जी.- १ एवं ३)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
मेघालय, शिलांग - 793 001.



भाषा के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती क्योंकि भाषा का संबंध संस्कृति और संस्कारों से है। इसके अलावा यह हमारी जीवन शैली एवं रीति-रिवाज से भी जुड़ी हुई है। पत्रिका एक साधन है जो भाषा के द्वारा स्थानीय संस्कृति तथा संस्कारों की खुशबू बिखेरती है। हिन्दीतर क्षेत्र में स्थित पूर्वोत्तर क्षेत्र के मेघालय, शिलांग की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका “पूर्वाशा” के जरिए न केवल हम राजभाषा को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं, अपितु मेघालय की प्रकृति व मनोरम दृश्यों से भी परिचित कराने का प्रयास करते हैं।

यह पत्रिका एक साधन है, जो हमारे विचारों को वाणी देने तथा लिपिबद्ध करने का कार्य करती है। हिन्दी भाषा विश्व की तमाम भाषाओं में से एक मधुर तथा वैज्ञानिक भाषा है। भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त हिन्दी में पत्रिका प्रकाशित करने से हिन्दी अपना संदेश लिए बृहत्तर क्षेत्र तक सहजता से पहुँचती है। “पूर्वाशा” के माध्यम से हमारा निरन्तर प्रयास बना रहेगा कि पूर्वोत्तर सहित पूरे राष्ट्र में हिन्दी का उत्तरोत्तर विकास होता रहे तथा हिन्दी के प्रति सभी अपनी निष्ठा बनाए रखें।

हिन्दी के प्रति हमारा लगाव एवं साहित्य के प्रति रुचि के फलस्वरूप “पूर्वाशा” को आसान और रोचक एवं तथ्यपरक रूप से सँवारने की हमारी कोशिश में कुछ त्रुटियाँ हो सकती हैं, भविष्य में इसमें और अधिक निखार लाने हेतु आपके सुझाव एवं मार्गदर्शन अपेक्षित है।

शुभकामनाओं सहित,

सागर काळे

सागर विजय काळे





दैनिक पूर्वोदय

सही दिशा, सही खबर

शिलोंग महालेखाकार (लेखापरीक्षा) कार्यालय में हिंदी दिवस

शिलोंग, 15 सितंबर (पू.मं.)
क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलोंग और कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारों), शिलोंग द्वारा संयुक्त रूप से गत 14 दिनों का हिंदी दिवस मनाया गया।

इस मौके पर विनोद धुवेल, कर्मचारी अधिकांशों ने उत्कृष्टता से कार्यवाही के अतिरिक्त ही कर्मचारियों का स्वागत किया उन्होंने कार्यक्रमों में संयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया।

इस दौरान कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारों) की वार्षिक रिपोर्ट (लेखा एवं हकदारों) की वार्षिक रिपोर्ट 16वें अंक का वित्तिय मालिकता



ने विकसित रूप में किया गुरु मंगल, भारत सरकार द्वारा प्रेषित संदेश को अधिकतम संभव रूप से प्रसारित करने के लिए प्रयास किया गया।

वार्षिक हिंदी पत्रिका और नवीन पूर्वोदय संदेश के लिए भी सूचनाएं दी गई हैं। कार्यक्रम का समापन वरिष्ठ लेखा अधिकारी जॉर्ज फ्रेडरिक ने किया।

सच से समझीता नही

प्रातःखबर

AGSRIN-2095 15089 PRATYAH KHABAR, Guwahati, Friday, 17 September, 2021. Vol. 17, No. 151, Page No. 12778. Published by: 12, Purnima, Shillong.

क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, शिलांग ने मनाया हिंदी दिवस

शिलोंग, 16 सितंबर (पू.मं.)
क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, शिलांग ने गत 14 दिनों का हिंदी दिवस मनाया। इस दौरान कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारों), शिलोंग और कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारों) की वार्षिक रिपोर्ट (लेखा एवं हकदारों) की वार्षिक रिपोर्ट 16वें अंक का वित्तिय मालिकता

पूर्वांचल प्रहरी

पूर्वांचल

जिब्रगढ़ में क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित

19 दिवस 2021

The Shillong Times

ESTABLISHED 1945
Total no of pages - 12
Shillong Regn No. 3778/21
SHILLONG, THURSDAY, SEPTEMBER 16, 2021
www.shillongtimes.com

Hindi Diwas celebrated

By Our Reporter

SHILLONG, Sep 15: Along with rest of the country, the Regional Training Institute, Shillong, Office of the Accountant General (Audit), Shillong, and Office of the Accountant General (A&E), Shillong, jointly celebrated Hindi Diwas on Tuesday.

According to a statement, the programme, which was organised at Civil Accounts Sports and Cultural Club, Office of the AG (A&E) to mark the day, was inaugurated by lighting of the ceremonial lamp by group officers.

During the occasion, AG (A&E) Frederick Syiemlieh released Navin Purvanchal Sandesh, an annual Hindi magazine.

The best three contributors of Navin Purvanchal Sandesh were also conferred with certificates and cash awards.



दैनिक पूर्वोदय

सही दिशा, सही खबर

महालेखाकार कार्यालय, शिलोंग में हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह

शिलोंग, 28 सितंबर (पु.सं.)। क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलोंग, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलोंग और कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलोंग द्वारा संयुक्त रूप से गत 27 सितंबर को कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में निहित समारोह के लिए हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह मनाया गया। इस मौके पर सभागार काले, उप महालेखाकार,

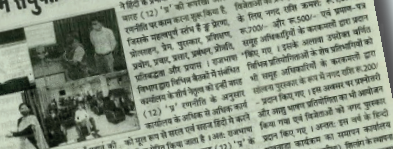


आपकी जुबान में आपके दिल की बात

सेंटिनल

शिलोंग स्थित महालेखाकार के तीनों कार्यालयों में संयुक्त रूप से हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह संपन्न

शिलोंग, 28 सितंबर (पु.सं.)। क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलोंग, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलोंग और कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलोंग द्वारा संयुक्त रूप से गत 27 सितंबर को कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में निहित समारोह के लिए हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह मनाया गया। इस मौके पर सभागार काले, उप महालेखाकार,



आपकी जुबान में आपके दिल की बात

The Shillong Times

ESTABLISHED 1945

SHILLONG, WEDNESDAY, SEPTEMBER 29, 2021

Postal Regn. No. NE/749/2021-2023

www.theshillongtimes.com

Hindi Fortnight celebration ends

SHILLONG, Sep 28: The Regional Training Institute, office of the Accountant General (Audit) Meghalaya, and office of the Accountant General (A&E), Meghalaya, organised a closing ceremony of the Hindi Fortnight celebration at the Civil Accounts Sports and Cultural Club, A&E office here, on Monday. Cash awards were given along with certificates to the first (Rs 1,000), second (Rs 700) and third prize (Rs 500) winners in various competitions including Antyakshari competition, translation competition, Hindi essay writing and dictation competitions. Remaining participants of the aforementioned competitions were also given cash award of Rs 200. Quiz and extempore speech competitions were also organised on the occasion with cash awards given away to the winners.

सेंटिनल



आपकी जुबान में आपके दिल की बात



श्री पुरुषोत्तम गिरि, कनिष्ठ अनुवादक, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर कार्यक्रम का संचालन करते हुए।



हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर कार्यक्रम का आनंद लेते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



श्री फेडेरिक सिएमलेह, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए।



श्री सुब्बाया, उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए।



श्री बिनोद भुजेल, कल्याण अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए।



श्री पारभा रॉय रिंगख्लेम, स्थापना अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए।



श्री विनोद भुजेल, कल्याण अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर स्वागत भाषण देते हुए।



मुहम्मद जियाऊल हक, वरिष्ठ अनुवादक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर गृह मंत्री, भारत सरकार का संदेश पाठ करते हुए।



श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली, कनिष्ठ अनुवादक, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर केन्द्रीय गृह और सहकारिता मंत्री के संदेश का वाचन करती हुई।



हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर केन्द्रीय गृह और सहकारिता मंत्री के संदेश वाचन करते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



श्री फेडेरिक सिमलेह, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करती हुई श्रीमती अलोका विश्वास, वरिष्ठ लेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग।



श्री विनोद भुजेल, कल्याण अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर वार्षिक हिन्दी पत्रिका "पूर्वाशा" 2020 में छपे लेखों में से "आई.ए. एण्ड ए.डी." कार्यालयों से प्राप्त सर्वाधिक फीडबैक के आधार पर नकद पुरस्कार प्राप्त करते हुए मुहम्मद जियाऊल हक, वरिष्ठ अनुवादक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



श्री आनंद कौशल, वरिष्ठ लेखा अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए।



हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर कार्यक्रम के समापन समारोह में राष्ट्र गान प्रस्तुत करते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली, कनिष्ठ अनुवादक, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह के अवसर पर कार्यक्रम का संचालन करती हुई।



हिन्दी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह के अवसर पर कार्यक्रम का आनंद लेते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



हिन्दी दिवस 2021 के अवसर पर कार्यक्रम के समापन समारोह के उपरांत कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) एवं हिन्दी शिक्षण योजना, मेघालय, शिलांग के स्टाफ की एक झलक।



श्री बेंजामिन करूणाकरण, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए।



श्री सुब्बैया, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए।



श्री सागर विजय काळे, उप महालेखाकार (ए.एम.जी. - १ एवं ३), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए।



श्री पारभा रॉय रिंगख्लेम, स्थापना अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए।



श्री सागर विजय काळे, उप महालेखाकार (ए.एम.जी. - १ एवं ३), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह के अवसर पर स्वागत भाषण देते हुए।



मुहम्मद जियाउल हक, वरिष्ठ अनुवादक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह के अवसर पर श्रोताओं के लिए आयोजित आशु भाषण प्रतियोगिता हेतु श्रोताओं को मंच पर आमंत्रित करते हुए।

"भाषा की समस्या का समाधान सांप्रदायिक दृष्टि से करना गलत है।" - लक्ष्मीनारायण सुधांशु



श्री बेंजामिन करुणाकरण, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री दीपक कुमार, एम.टी.एस., कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



श्री सुब्बैया, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री मिथिलेश कुमार, डी.ई.ओ., कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



श्री सागर विजय काळे, उप महालेखाकार (ए.एम.जी. - १ एवं ३), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री वेंकटेश जिनुकाला, ए.ए.ओ., कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



श्री पारभा रॉय रिंगख्लेम, स्थापना अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह के अवसर पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए।



हिन्दी पखवाड़ा 2021 के समापन समारोह के अवसर पर कार्यक्रम के समापन समारोह में राष्ट्र गान प्रस्तुत करते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



श्री सुब्बैया, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह के अवसर पर सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 28/07/2022 को अभिभाषण देते हुए श्री पारभा रॉय रिगख्लेम, स्थापना अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



श्री सुब्बैया, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह के अवसर पर शुभकामनाएं देती हुई श्रीमती एस.एस.डी. सिएम, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



श्री सुब्बैया, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग अपने विदाई समारोह के अवसर पर वक्तव्य देते हुए।



श्री सुब्बैया, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह के अवसर पर उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों की एक झलक।



श्री सुब्बैया, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह के अवसर पर उनको खासी शाल ओढ़ाते हुए श्रीमती लालमुनहुवलाई थिपूते, वरिष्ठ लेखापरीक्षक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा अपने विदाई समारोह के अवसर पर उपहार प्राप्त करते हुए श्री सुब्बैया, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



कैसे बनाएं कार्यालय में अपनी बेहतर छवि



मुहम्मद जियाउल हक

वरिष्ठ अनुवादक

कि सी भी कार्यालय में प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी यह चाहता है कि उसकी कार्यालय में अच्छी छवि या इमेज हो और इस छवि की चाहत में एवं उसे कायम रखने के लिए वह अधिकारी/कर्मचारी बहुत मेहनत करता है। परन्तु कभी-कभी अच्छी छवि का अर्थ प्रायः गलत भी मान लिया जाता है। खैर, अच्छी तरह तैयार एवं सज-संवर कर कार्यालय आना आपकी छवि तय नहीं करता अपितु आपका व्यवहार, समयनिष्ठा और कार्य तीनों का सम्मिलित रूप ही आपकी छवि को कार्यालय में दूसरों के समक्ष और अधिक निखार लाता है।

छोटे एवं बड़े पैमाने के आधार पर किसी कार्यालय में अल्प या बहु संख्या में अधिकारी/कर्मचारी कार्यरत रहते हैं। परन्तु उन अधिकारियों/कर्मचारियों में से गिने-

चुने अधिकारियों/कर्मचारियों की छवि ही अच्छी मानी जाती है। आखिर इन गिने-चुने अधिकारियों/कर्मचारियों में ऐसी क्या खासियत होती है जिनके कारण वे अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों की तुलना में भिन्न दिखाई देते हैं। आइए इस विषय में जानने की कोशिश करते हैं :-

पुरुष हो या महिला, निजी श्रृंगार दोनों के लिए आवश्यक है क्योंकि यह आपके व्यक्तित्व को निखारती है। इसके अलावा प्रातःकाल कार्यालय जाने की जल्दबाजी सबको होती है पर इसका मतलब यह नहीं कि ढंग से तैयार हुए बिना आप कार्यालय की ओर प्रस्थान करें। जहाँ तक हो सके आप हमेशा शालीन पोषाकों का ही चयन करें। यह निर्विवाद सत्य है कि प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी का निजी वाहन नहीं होता और जिनके पास है, वे भी कभी-





कभी मौसम या अन्य कारणों से टेक्सी, रिक्शा, सिटी बस, स्थायी रेल इत्यादि से सफर करते हुए कार्यालय पहुँचते हैं। जाहिर है सिटी बस या स्थायी रेल में सभी को भीड़-भाड़ भरे माहौल का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में खास तौर पर महिलाओं के श्रृंगार नष्ट हो जाता है। इसलिए कार्यालय पहुँचकर आप स्वयं को संवार लें पर ध्यान रहे कि इसमें ज्यादा समय नष्ट न कर शेष समय कार्यालयीन कामकाज पर ध्यान दें।

कार्यालय में आपका कार्य आपकी छवि बनाता है क्योंकि आप कार्यालय में कार्य करने के लिए जाते हैं, गप्पे मारने के लिए नहीं। हमेशा यह प्रयास करें कि आप अपने कार्यों को अधूरा न छोड़ें। उसे यथासंभव पूरा करने का प्रयास करें, जिससे किसी अन्य अधिकारी/कर्मचारी को शिकायत का अवसर न मिले। आपके द्वारा की गई अच्छी कार्य निष्पादन आपके अधिकारियों या वरिष्ठतम पदाधिकारियों के समक्ष आपकी अच्छी छवि का निर्धारण करने में सक्षम होगी। यदि किसी कारणवश आप दीर्घकालीन छुट्टी पर जा रहे हैं तो छुट्टी में जाने से पूर्व आप अपना कार्य पूरा करने की कोशिश करें ताकि आपके जाने के पश्चात अन्य कर्मचारियों को असुविधा का सामना न करना पड़े। इसके अलावा छुट्टी पर जाने से पूर्व यदि आप अन्य संबंधित कर्मचारियों को फाईल, रजिस्टर आदि दस्तावेजों के बारे में संकेत कर जाये तो बेहतर रहेगा, जिससे आपकी अनुपस्थिति में भी कार्यालयीन कामकाज सुचारू रूप से चल सके। वैसे भी कार्यालय या संस्था किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित नहीं होता, अपितु व्यक्ति विशेष कार्यालय या संस्था से संबंधित होता है। उपर्युक्त बातें भले ही पढ़ने या सुनने में कटु लगे पर कार्यालय में किसी भी कर्मचारी के छवि को निखारने में उक्त बातें भरपूर सहायक सिद्ध होती हैं।

आपका व्यवहार भी आपकी छवि को प्रभावित करता है। शिष्ट व्यवहार, मीठी बोली हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है। प्रत्येक कर्मचारी के लिए कार्यालय आचरण होना भी बहुत आवश्यक है। यदि आपका स्वभाव क्रोध एवं हिंसा से परिपक्व है तो आप इसे त्यागने की कोशिश करें क्योंकि इससे कभी भी किसी का हित नहीं हुआ है अपितु सदा अहित ही हुआ है। क्रोध और हिंसा दोनों ऐसे जहर हैं, जो ड्रग्स की भाँति भीतर ही भीतर व्यक्ति को स्वयं में अहंकार रूपी चादर की आड़ में नष्ट



कर देता है। क्रोधित मुद्रा में लिप्त व्यक्ति कभी भी अच्छाई और बुराई की परख नहीं कर पाता। जिस प्रकार धनुष से निकला हुआ वाण वापस नहीं लौटाया जा सकता उसी प्रकार क्रोध के आवेग में व्यक्ति द्वारा कहे गए अपशब्द को भी वापस नहीं लाया जा सकता। हालांकि किसी से आदर से कैसे पेश आना है, यह अधिकारी/कर्मचारी को पता होना चाहिए। आप कितने भी वरिष्ठ क्यों न हों पर अपने अधीनस्थ करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों से हमेशा शालीनता से पेश आए। प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी को सम्मान देना चाहिए, चाहे वह पद में आपसे कितना ही नीचा क्यों न हो? उसके पद को सम्मान देने से पूर्व आप उस कर्मचारी को सम्मान दें। इसके अलावा कार्यालय में सबसे बात करना अच्छी बात है पर इसका यह आशय नहीं कि आप अपना अधिक समय फिजूल की बातों में गवाएँ, जैसे निजी सुख-दुःख की बातें आदि। सबसे सीमित बात करें, जिससे आप अधिकांश समय कार्यालयीन कामकाज पर दे सकें।

आपकी अनुशासनप्रियता और समयनिष्ठा भी आपको सबसे अलग करती है। आपका यह गुण आपकी अच्छी छवि बनाने में कारगर साबित होता है। समय से कार्यालय आना, अपना कार्य ठीक समय पर करना ऐसी आदतें हैं जो हर अधिकारी/कर्मचारी या व्यक्ति में होनी आवश्यक है। यदि हम ध्यानपूर्वक आकलन करें तो पाते हैं कि प्रायः इस बिन्दु में उल्लेखित बातों का पालन ही अनदेखा सा प्रतीत होता है। खैर, हमें उक्त बातों



का यथासंभव पालन करने का भरपूर प्रयास करना चाहिए।

जिस प्रकार ग्राम से लेकर शहरों एवं कस्बों तक खास कर युवाओं में दिन-व-दिन मदिरापान की लत बढ़ती जा रही है। उसी प्रकार कार्यालय के दूरभाष आदि का व्यक्तिगत प्रयोग आजकल कर्मचारियों की आदत-सा बनता जा रहा है। कार्यालय के दूरभाष आदि का दुरुपयोग से आपकी अशिष्टता झलकती है। दूरभाष की सुविधा का प्रयोग तभी करें जब अति आवश्यक हो, जैसे कोई महत्वपूर्ण सूचना देने के लिए आदि। इसके अलावा कार्यालय मुद्रण, फैक्स, प्रतिलिपि मशीन, ई-मेल इत्यादि का उपयोग भी व्यक्तिगत प्रयोग के बजाय कार्यालयीन कामकाज के लिए ही उपयोग करना चाहिए। कार्यालय के सामग्रियों का उसी के उपयोग में लाने से आपकी शिष्टता एवं व्यवहार का परिचय मिलता है। वैसे भी किसी ने ठीक ही कहा है कि आपका व्यवहार ही आपका परिचय है।

कार्यालय में अपने आपको अपनी कुर्सी या पद के कार्य तक ही सीमित न रखें। आपको कार्यालय में होने वाले महत्वपूर्ण विषयों के बारे में भी जानकारी रखनी चाहिए। कार्यालय के अतिरिक्त बाहरी दुनिया के बारे में भी ज्ञान रखना आवश्यक होता है। इसके लिए आप समाचार-पत्र नियमित पढ़ें, अच्छी ज्ञानवर्धक पुस्तकें पढ़ कर अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकते हैं। टी.वी., रेडियो एवं इंटरनेट के जरिए अपनी जानकारी बढ़ा सकते हैं, जिससे आप हर विषय पर बात करने में सक्षम होंगे तथा धीरे-धीरे आपका आत्मविश्वास भी बढ़ेगा। आपका कार्य, व्यवहार

और समयनिष्ठा आपको पदोन्नति भी दिलाने में मददगार साबित होगी। अपनाइए इन छोटी-छोटी बातों को और कार्यालय में अपनी पहचान व छवि बनाइए।

उपसंहार : - समग्रतः कहा जा सकता है कि कार्यालय में अपनी छवि को बरकरार रखने के लिए व्यवहार, समयनिष्ठता और कार्य तीनों का तालमेल बनाए रखें, जिससे किसी दूसरे कर्मचारी को आप पर शिकायत का अवसर न मिले। कार्यालयीन सामग्रियों का सदा सही उपयोग करें और ध्यान रखें कि इनका कभी दुरुपयोग न होने पाए। सदा अहिंसा का मार्ग अपनाएँ। व्यर्थ में समय नष्ट न करें। यदि आपके पास कार्य नहीं है तो पूर्व फाइल आदि दस्तावेज जानकारी हेतु पढ़ सकते हैं। इसके अलावा आप अपने कार्य के अतिरिक्त समयानुसार दूसरे के कार्य में भी हाथ बटा सकते हैं। जाहिर है कार्यालय में आपको भी कभी न कभी सहायता की आवश्यकता पड़ेगी या पड़ सकती है। ऐसे में आप निःसंकोच होकर दूसरों की मदद ले सकेंगे। अतः हम कह सकते हैं कि यदि आप उपर्युक्त नियमों का पालन करेंगे तो एक न एक दिन अवश्य दूसरों की दिल एवं नजरों में आपकी छवि मोती की भाँति चमकने लगेगी। वैसे भी यह निर्विवाद सत्य है कि स्वयं में तो हम सब अच्छे होते हैं। परन्तु किसी व्यक्ति को अच्छा तब माना जाता है जब वह बहुसंख्यक द्वारा निःसंकोच एवं बिना भेदभाव के स्वीकार किया जाता है।



सफलता का रहस्य



श्रीमती मीरा देबी

माँ - श्री रीतेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक बार एक नौजवान लड़के ने सुकरात से पूछा कि सफलता का रहस्य क्या है? सुकरात ने उस लड़के से कहा कि तुम कल मुझे नदी के किनारे मिलो। वो मिले, फिर सुकरात ने नौजवान से उनके साथ नदी की तरफ बढ़ने को कहा और जब आगे बढ़ते-बढ़ते पानी गले तक पहुँच गया, तभी अचानक सुकरात ने उस लड़के का सर पकड़ के पानी में डुबो दिया। लड़का बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने लगा, लेकिन सुकरात ताक़तवर थे और उसे तब तक डुबोये रखे जब तक कि वो नीला नहीं पड़ने लगा। फिर सुकरात ने उसका सर पानी से बाहर निकाल दिया और बाहर निकलते ही जो चीज उस लड़के ने सबसे पहले की वो थी हाँफते-हाँफते तेजी से सांस लेना।

सुकरात ने पूछा, “जब तुम वहाँ थे तो तुम सबसे ज्यादा क्या चाहते थे?”

लड़के ने उत्तर दिया, “सांस लेना”

सुकरात ने कहा, “यही सफलता का रहस्य है”

जब तुम सफलता को उतनी ही बुरी तरह से चाहोगे जितना कि तुम सांस लेना चाहते थे तो वो तुम्हें मिल जाएगी। इसके अलावा और कोई रहस्य नहीं है।

दोस्तों, जब आप सिर्फ और सिर्फ एक चीज चाहते हैं तो वो चीज आपको मिल जाती है। जैसे छोटे बच्चों को देख लीजिये वे न भूतकाल में जीते हैं न भविष्य में, वे हमेशा वर्तमान में जीते हैं और जब उन्हें खेलने के लिए कोई खिलौना चाहिए होता है या खाने के लिए कोई टॉफी चाहिए होती है तो उनका पूरा ध्यान उनकी पूरी शक्ति बस उसी एक चीज को पाने में लग जाती है और एक परिणाम के रूप में वे उस चीज को पा लेते हैं। इसलिए सफलता पाने के लिए फोकस बहुत जरूरी है। सफलता को पाने की जो चाहता है उसमें तीव्रता होना बहुत जरूरी है और जब आप वो फोकस और तीव्रता पा लेते हैं तो सफलता आपको मिल ही जाती है।

"हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।" - स्वामी दयानंद

पूर्वांश, अंक-31, वर्ष : 2021-2022



नोहकलिकाई फॉल्स का नाम कैसे पड़ा ?



श्री बिनोद भुजेल

कल्याण अधिकारी

हम में से अधिकांश लोगों को चेरापूजी (या सोहरा जैसा कि स्थानीय लोग इसे कहते हैं) के बारे में पता होना चाहिए क्योंकि यह पृथ्वी पर सबसे अधिक नम स्थानों में से एक है। यह मेघालय राज्य का सबसे अधिक देखा जाने वाला पर्यटन स्थल भी है। चेरापूजी कई सुरम्य (प्रकृतिमनोहर) पर्यटन स्थलों का दावा करता है और इनमें से सबसे लोकप्रिय स्थान नोहकलिकाई जलप्रपात है, जिसे भारत में सबसे ऊँचा डुबकी जलप्रपात होने का गौरव प्राप्त है।

यह लेख, पर्यटन और नोहकलिकाई फॉल्स से संबंधित पहलुओं पर बात करने का इरादा नहीं रखता है, बल्कि इस बात पर है कि इस फॉल्स का नाम “नोहकलिकाई” कैसे पड़ा ?

खासी (मेघालय के खासी हिल्स जिले के मूल निवासी) के पास किसी स्थान का नामकरण करने का एक अनूठा तरीका है। किसी स्थान को नाम कैसे दिया जाता है, इसके पीछे हमेशा एक कहानी / किंवदंती होती है। इनमें से अधिकतर कहानियाँ, हालांकि छोटी और सरल हैं, मानवीय संबंधों पर कहानियाँ हैं। इस तरह से न केवल एक स्थान का नाम मिलता है बल्कि यह उस महत्व को भी रेखांकित करता है जो खासी समाज अंतर-व्यक्तिगत संबंधों और मानवीय मूल्य रखता है।



नोहकलिकाई जलप्रपात की कथा इस प्रकार है – जलप्रपात के पास के गाँव में “का लिकाई” नाम की एक गरीब लेकिन दयालु और सज्जन महिला रहती थी (“का” खासी में स्त्रीलिंग के लिए दिया गया उपसर्ग है।) वह एक युवा माँ थी जो दुर्भाग्य से कम उम्र में विधवा हो गई थी। लिकाई को अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए मजदूरी के रूप में काम करने के लिए मजबूर किया गया था। उसकी एक छोटी बच्ची थी जिसे वह बहुत प्यार करती थी लेकिन, अपने काम के कारण उस पर पूरा ध्यान नहीं दे पाती थी। स्वाभाविक रूप से जब वह घर पर होती तो वह अपना सारा समय बच्चे के साथ बिताती। गाँव की अन्य महिलाओं के अनुनय-विनय के माध्यम से, जिन्होंने जोर देकर कहा कि बच्चे को एक पिता की जरूरत है। अतः उसने एक आदमी से शादी कर ली। नया पति क्षुद्र निकला और लिकाई के घर आने पर बच्चे से ईर्ष्या करने लगा। लिकाई ने उसकी ईर्ष्या को भाँपा लेकिन, उसे उम्मीद थी कि समय बीतने के साथ उसका पति भी बच्चे से प्यार करने लगेगा। परन्तु उसकी क्षुद्रता ने उसे इतना भयानक काम करने के लिए प्रेरित किया, कि इस खूबसूरत फॉल्स को इसके साथ जोड़ा जाना दुर्भाग्यपूर्ण था।

उस आदमी की ईर्ष्या दूर नहीं हुई और एक दिन उसे बच्चे से इतनी जलन हुई कि उसने बच्चे को काट दिया तथा अपनी पत्नी को खिलाने के लिए उन्होंने उस बच्चे के मांस को ही बना डाला। दिन-भर के काम के बाद घर आई लिकाई भूख से तड़प रही थी। उसने अपने बच्चे की तलाश की लेकिन, वह नहीं मिली। अतः लिकाई यह सोचकर कि बच्चा पड़ोसी के घर में है, वह अपने पति द्वारा बनाए गए खाना खाने के लिए बैठ गई। इस भयानक कृत्य से अनजान लिकाई ने आहार उपभोग किया और तत्पश्चात नियमित पान के पत्ते खाने के लिए बैठ गई। पान के पत्तों की टोकरी के पास लिकाई ने एक छोटी उंगली देखी जिसे उसने तुरंत अपनी बेटी की पहचान कर ली। वह जल्दी से समझ गई कि क्या हुआ था। उसकी अनुपस्थिति में जो कुछ हुआ था उसे महसूस करते हुए वह क्रोध और शोक से पागल हो गई। वह दौड़ी और दौड़ती रही जब तक कि वह झरने के किनारे तक नहीं पहुँच गई। अन्ततः वह झरने में छलांग लगा दी। इस किंवदन्ती के कारण इसे “नोहकलिकाई” जलप्रपात का नाम दिया गया है जो “लिकाई की छलांग” में अनुवाद होता है।





ई-ऑफिस : फाइल प्रबंधन प्रणाली का भविष्य



श्री रीतेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ई-ऑफिस का उद्देश्य अधिक प्रभावी और पारदर्शी अंतर-सरकारी प्रक्रियाओं की शुरुआत करके शासन का समर्थन करना है। ई-ऑफिस का विजन सभी सरकारी कार्यालयों के कामकाज को सरल, उत्तरदायी, प्रभावी और पारदर्शी बनाना है। ओपन आर्किटेक्चर जिस पर ई-ऑफिस बनाया गया है, इसे एक पुनः प्रयोज्य ढांचा और एक मानक पुनः प्रयोज्य उत्पाद बनाता है, जिसे केंद्र, राज्य और जिला स्तर पर सरकारों में दोहराया जा सकता है। उत्पाद एक ही ढांचे के तहत स्वतंत्र कार्यों और प्रणालियों को एक साथ लाता है।

ई-ऑफिस के लाभ :

- पारदर्शिता बढ़ाएँ - फाइलों को ट्रैक किया जा सकता है और उनकी स्थिति हर समय सभी को ज्ञात होती है।
- जवाबदेही बढ़ाएँ - गुणवत्ता की जिम्मेदारी और निर्णय लेने की गति की निगरानी करना आसान है।
- डेटा सुरक्षा और डेटा अखंडता सुनिश्चित करें।
- सरकार को फिर से आविष्कार करने और फिर से इंजीनियरिंग करने के लिए एक मंच प्रदान करना।
- अनुत्पादक प्रक्रियाओं से कर्मचारियों की ऊर्जा और समय को मुक्त करके नवाचार को बढ़ावा देना।
- सरकार की कार्य संस्कृति और नैतिकता को बदलना।
- कार्यस्थल और प्रभावी ज्ञान प्रबंधन में अधिक सहयोग को बढ़ावा देना।

ई-ऑफिस के उत्पाद :

- ई-फाइल :** सरकार उत्पादकता और इसकी आंतरिक प्रक्रियाओं में सुधार, निर्णय लेने में पारदर्शिता बढ़ाने और देश में समावेशी शासन के हिस्से के रूप में नागरिक भागीदारी लाने पर बहुत जोर दे रही है। शासन प्रक्रियाएं फाइलों के निर्माण, फाइल में नोटिंग, विभिन्न स्तरों पर निर्णय, और अंत में पत्रों और अधिसूचनाओं के रूप में निर्णय जारी करने के आसपास आधारित होती हैं। सरकार से कोई भी अनुरोध विभिन्न चरणों की विस्तृत प्रक्रिया से होकर गुजरता है जिसे कार्यप्रवाह कहा जाता है।
- ज्ञान प्रबंधन प्रणाली :** सरकार को विभिन्न श्रेणियों के दस्तावेजों की बड़ी मात्रा का प्रबंधन करना होता है। ये दस्तावेज नीतियां, प्रपत्र, अधिनियम और विनियम, परिपत्र, दिशानिर्देश और मानक और नियमावली हो सकते हैं। दस्तावेज के एक केंद्रीय भंडार को बनाए रखने से दस्तावेजों का एक ही भंडार रखने में मदद मिलती है जहां से सभी विभाग/मंत्रालय उपयोगकर्ता जानकारी तक पहुँच सकते हैं।





iii. सी.ए.एम.एस.: ई-ऑफिस सहयोग और संदेश सेवा उपयोगकर्ताओं को प्रभावी ढंग से संवाद करने और वास्तविक समय में जानकारी और विचारों को साझा करने में मदद करती है। मॉडल के ओपन आर्किटेक्चर विभिन्न ई-ऑफिस सेवाओं को एकीकृत करने में सक्षम हैं। ई-टॉक आपकी सभी फाइलों, दस्तावेजों, छुट्टी, टूर को एक साथ एक ही स्थान पर खींचता है और साथ ही साथ आपकी स्थिति को अपडेट भी करता है। एकीकृत संचार और सहयोग वातावरण के साथ, कर्मचारी अधिक जुड़े हुए कार्यस्थल को बढ़ावा देने के लिए संचार और सहयोग करने के लिए वैयक्तिकृत और कॉन्फिगर कर सकता है।

iv. ई-छुट्टी : यह ऑनलाइन छुट्टी के लिए आवेदन करने, लागू छुट्टी की स्थिति, ली गई छुट्टियों के विवरण और शेष राशि को ट्रैक करने के लिए एक सरल सहज वर्कफ्लो आधारित प्रणाली है। छुट्टी की स्वीकृति प्रस्तुत करने के स्वचालित पदानुक्रमित चैनल के माध्यम से सक्षम की जाती है और छुट्टी को उस पदानुक्रम में भेज दिया जाता है जो कार्यप्रवाह में पूर्व-परिभाषित होता है। छुट्टी के नियम मौजूदा सरकारी नियमावली के अनुसार कॉन्फिगर किए गए हैं और छुट्टी प्रसंस्करण भूमिका आधारित है। प्रणाली कागज आधारित अनुप्रयोगों को खत्म करने और तेज और समयबद्ध प्रसंस्करण में मदद करती है। मंजूरी देने वाला प्राधिकारी छुट्टी मंजूर करने से पहले छुट्टी की शेष राशि देख सकता है और कर्मचारियों का विवरण भी छोड़ सकता है।

v. ई-टूर : यह एक ऐसी प्रणाली है जो दौरे के लिए आवेदन करने से लेकर बिलों के अंतिम निपटान तक कर्मचारी यात्रा कार्यक्रमों के कुशल प्रबंधन की सुविधा प्रदान करती है। यह

प्रणाली सुनिश्चित करती है कि सभी दूर अनुरोधों का ठीक से हिसाब किया जाए। कर्मचारी बिना किसी परेशानी और कागजी कार्रवाई में देरी के दौरे के रिकॉर्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं, रद्द कर सकते हैं, स्वीकृत/अस्वीकार कर सकते हैं और देख सकते हैं। कर्मचारियों के लिए, सिस्टम किसी भी समय उनके दौरे के विवरण को आसानी से देखने और ऑनलाइन दौरों का अनुरोध करने की अनुमति देता है। प्रबंधकों के लिए, दौरे की स्वीकृति में अब कागजी कार्रवाई शामिल नहीं है। सिस्टम कर्मचारी के दौरे और योजनाओं का पूरा ट्रेल्स प्रदान करता है।

vi. स्पैरो: यह व्यापक प्रदर्शन मूल्यांकन डोजियर पर आधारित एक ऑनलाइन प्रणाली है जिसे राज्य सरकार/केंद्र सरकार द्वारा सेवा के प्रत्येक सदस्य के लिए बनाए रखा जाता है। इस प्रणाली का उद्देश्य अधिकारियों द्वारा पी.ए.आर. की इलेक्ट्रॉनिक फिलिंग को इस तरह से सुविधाजनक बनाना है जो न केवल उपयोगकर्ता के अनुकूल हो बल्कि उनकी सुविधा के अनुसार कहीं से भी कभी भी भरने की अनुमति देता है। भरने और जमा करने की प्रक्रिया के वर्कफ्लो पदानुक्रम में विभिन्न स्तरों पर अधिकारियों को समान सुविधा उपलब्ध होगी। इस प्रणाली से पूरी तरह से भरे हुए ए.पी.ए.आर. को जमा करने में होने वाली देरी को कम करने की भी उम्मीद है।

समग्रतः कहा जा सकता है कि कोविड के बाद के युग में, ई-ऑफिस अपनी विविध भूमिका और कार्यों के कारण सरकारी क्षेत्र में एक प्रमुख भूमिका निभाएगा।





बाढ़



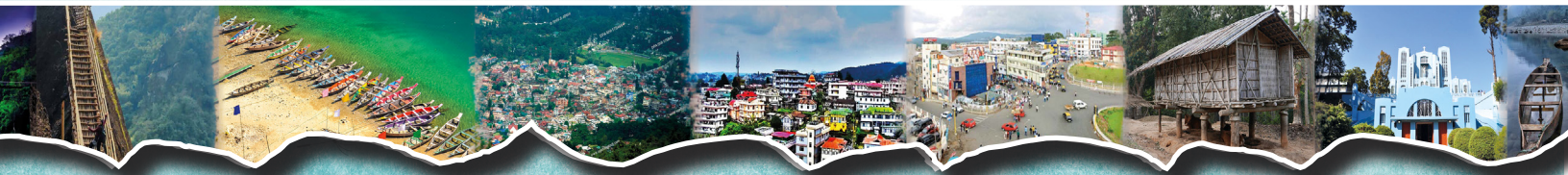
श्रीमती रोज बेगम

माँ - मुहम्मद जियाऊल हक
वरिष्ठ अनुवादक



बाढ़ एक भयंकर प्राकृतिक आपदा है। बाढ़ की भयंकरता, इसकी विभीषिका वही जानता है, जिसने प्रत्यक्ष रूप से इसको झेला है। जब नदी में बाढ़ आती है तो वह आस-पास के क्षेत्रों को अपनी चपेट में ले लेती है। किसान की वर्षों की मेहनत, उनके खेत बाढ़ के कारण नष्ट हो जाते हैं। गाँवों और कस्बों में बाढ़ का प्रकोप दर्दनाक होता है। यातायात के सारे साधन तबाह हो जाते हैं। लोगों के घर डूब जाते हैं। कई दिनों तक बिजली नहीं मिलती है। उन लोगों की दशा दयनीय और असहाय हो जाती है। लोग अपना घर-बार छोड़कर सरकार द्वारा लगाए गए कैंपों में रहते हैं। दुर्भाग्यवश इन कैंपों में सफाई का अच्छा प्रबंध नहीं होता है जिसकी वजह से लोगों को कई तरह के रोगों का शिकार बनना पड़ता है।

बाढ़ में फंसे लोगों तक मदद पहुँचाना इतना आसान काम नहीं है। लोग अपने पक्के घरों के छतों पर रहने के लिए विवश हैं। आर्मी अफसर के कई लोग बाढ़ में पीड़ित लोगों की मदद करते हैं। खाने और जरूरी सामग्री को हेलीकॉप्टरों द्वारा पहुँचाया जाता है। नावों की मदद से बाढ़ग्रस्त इलाकों में पहुँचा जाता है। वहाँ पर फंसे लोगों को नाव के जरिये सुरक्षित स्थानों पर ले जाया जाता है। कई संस्थाएं बाढ़ग्रस्त लोगों की मदद करती हैं। बाढ़ग्रस्त इलाकों की दशा बेहद खराब हो जाती है। बाढ़ के वक्त खतरनाक बीमारियाँ फैलती हैं, जिस पर अंकुश लगाना नामुमकिन हो जाता है। प्रत्येक वर्ष बाढ़ के कारण करोड़ों रूपए की संपत्ति नष्ट हो जाती है।



बाढ़ के कारण सड़क और पुल, पेड़-पौधे सब नष्ट हो जाते हैं। सरकार की यह जिम्मेदारी है कि वह ऐसे नदियों पर बाँध बनाये, जिन क्षेत्रों में बाढ़ आती है। लोगो के कच्चे घरों के जगह पर पक्के घरों के निर्माण करवाना चाहिए। सरकारों को जरूरतमंद लोगो की सहायता करनी चाहिए। भारत के कुछ राज्यों में अक्सर बाढ़ आती है। वह राज्य है गुजरात, उड़ीसा, असम, बिहार, आंध्र प्रदेश, पंजाब, महाराष्ट्र, केरल जहाँ हर साल बाढ़ आने का अनुमान किया जाता है। वर्ष 2018 में केरल राज्य में भीषण बाढ़ आयी थी। चौदह से अधिक जिलों ने बाढ़ का प्रभाव बर्दाश्त किया। इस बाढ़ ने केरल में भयंकर तबाही मचाई थी।

कम वक्त में एक जगह में ज़रूरत से ज़्यादा लगातार अधिक जल जमा हो जाए तो बाढ़ की स्थिति उत्पन्न होती है। बाढ़ कई कारणों से आते हैं। अचानक असमय बाँध का टूट जाना, नदियों का जल स्तर बढ़ना, लगातार बारिश, सागर में कम्पन के कारण लहरें बढ़ जाती हैं और आस-पास के गाँवों को पानी में डूबा देती हैं और भयंकर विनाश करती हैं। अत्यधिक बाढ़ के पानी में लोग बह जाते हैं और कई लोगो की मृत्यु हो जाती है। चारों तरफ विनाश का नजारा होता है। आज जरूरत है सरकार को प्रति वर्ष आने वाले बाढ़ के खिलाफ कोई ठोस और महत्वपूर्ण कदम उठाये।

प्रदूषण, भूमंडलीय ऊष्मीकरण, लगातार वनों का उन्मूलन यानी कटाई जैसी गतिविधियां पर्यावरण को अनगिनत सालों से नुकसान पहुँचा रही हैं। मनुष्य की निरंतर हर क्षेत्र में उन्नति करने की चाह ने पर्यावरण को अपना रौद्र रूप धारण करने पर मजबूर कर दिया है। बाढ़ एक भयंकर आपदा है जिससे उस क्षेत्र के जन-जीवन पर बुरी तरह से असर पड़ता है। बाढ़ का पानी लोगो के घरों के अंदर, गली-मोहल्लों तक पहुँच जाता है। अतिरिक्त बाढ़ का पानी कच्चे-पक्के सभी घरों को तोड़ देता है। राज्यों में बाढ़ग्रस्त जगह की आर्थिक उन्नति बिलकुल मंद पड़ जाती है।

बाढ़ के कारण कई राष्ट्रीय उद्यानों में पानी भर जाता है जिसकी वजह से बेजुबान पशु-पक्षी मर जाते हैं। बाढ़ के बाद उन इलाकों में जानलेवा बीमारियों का जन्म होने लगता है। डेंगू, मलेरिया और टाइफाइड इत्यादि कई तरह की बीमारियां होती हैं जो सिर्फ

विनाश की ओर ले जाती हैं। बाढ़ के समय लोगो को ऊँचे जगहों पर जाकर बस जाना चाहिए। पहाड़ी इलाकों से बाढ़ का जल गाँव और शहरों तक पहुँच जाता है। लोगो को ऐसे जगहों पर सावधान रहने की जरूरत है।

लोगो को बाढ़ के समय ज़रूरी समान और खाद्य सामग्री अपने पास रख लेनी चाहिए। बाढ़ एक प्राकृतिक विपदा है। अचानक दस्तक दे सकती है। कभी-कभी अचानक बढ़ चली आती है और हमें घर के छतों पर जाना पड़ता है। ऐसे में घर की छत पर सहायता के लिए जानकारी दे। आप चाहे तो मदद के लिए एक चिह्न बना सकते हैं। राहत कार्य के लिए जुटे हेलीकाप्टर लोगो के मदद के लिए वहाँ जरूर आते हैं। बाढ़ दो तरह के होते हैं : प्राकृतिक और अप्राकृतिक बाढ़। प्राकृतिक कारणों की वजह से जो बाढ़ आती है उसे प्राकृतिक बाढ़ कहते हैं, जैसे कि लगातार कई दिनों तक बेलगाम वर्षा होना। इसकी वजह से चारों ओर जल स्तर बढ़ने लगता है और बाढ़ का रूप लेता है।

अचानक बादल फटने से चंद घंटों में जल सैलाब उमड़ पड़ता है। पानी का प्रवाह तेज होता है और बाढ़ जैसा भयावह नजारा देखने को प्राप्त होता है। ग्लेशियर से बर्फ का लगातार पिघलना, भूमंडलीय ऊष्मीकरण के कारण होता है। यह भी बाढ़ आने की एक वजह है। इसका पिघलता हुआ अतिरिक्त पानी नदियों का स्तर बढ़ा देता है। इसकी वजह से नदियों का जल शहरों और गाँवों में घुस जाता है। सागर में अचानक कम्पन के





कारण सुनामी जैसी स्थिति उत्पन्न होती है। समुद्रतल पर तेज भूकंप आता है जिसके कारण विशाल लहरों का निर्माण होता है। समंदर का पानी शहरों और गाँवों को प्रभावित कर देता है।

मनुष्य के लगातार प्रकृति पर प्रहार के कारण अप्राकृतिक बाढ़ का निर्माण होता है। देश में भ्रष्टाचार के कारण, खराब गुणवत्ता के बाँध बनाये जाते हैं। यह मजबूत नहीं होते हैं। अचानक यह बाँध टूट जाता है। हजारों किलोमीटर वाला पानी बाँध के आसपास के इलाकों में घुसकर उन्हें बर्बाद कर देता है। पृथ्वी अब ग्लोबेल वार्मिंग की मार झेल रही है और वातावरण पहले से अधिक परिवर्तित हो चुका है। कहीं सूखा और कहीं जरूरत से अधिक बारिश बाढ़ जैसी स्थिति पैदा कर देता है।

बाढ़ के कारण फसलें तबाह हो जाते हैं। बाढ़ की गंभीर परिस्थितियों के कारण जल प्रदूषित हो जाता है। लोगो को पीने के लिए स्वच्छ पानी नहीं मिलता है। गंदे पानी में रहने की वजह से लोगो की मौत हो जाती है। बाढ़ के कारण बिजली के खम्बों गिर जाते हैं। उसके बाद कई दिनों तक बाढ़ग्रस्त स्थानों में बिजली पहुँचाना नामुमकिन हो जाता है।

जिस क्षेत्र में बाढ़ आती है, वहाँ की सड़कें टूट जाती हैं। सड़कों के अवशेष बाढ़ के पानी के संग बह जाते हैं। इन क्षेत्रों में सड़क परिवहन बुरी तरीके से प्रभावित होता है। इसकी वजह से

आम आदमी को कई दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। जहाँ बाढ़ आती है, वहाँ पीड़ित लोगो को इलाज की जरूरत होती है मगर बाढ़ग्रस्त इलाकों के चिकित्सा केंद्र पानी में डूब जाते हैं। समय पर इलाज न मिलने की वजह से कई लोगो की मृत्यु हो जाती है। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में खाना नहीं मिल पाता है। लोगो की निजी खाद्य सामग्री पानी में डूब जाती है। लोगो को ऐसे मुश्किल वक्त में टोर्च और फर्स्ट ऐड बॉक्स जैसी जरूरी चीजें अपने पास रखनी चाहिए।

अतः कहा जा सकता है कि बाढ़ को नियंत्रण में लाने के लिए देश की सरकार ने विशाल बांधों का निर्माण किया है। मजबूत बांधों का निर्माण और अधिक होने चाहिए ताकि विनाशकारी बाढ़ से लोगो को बचाया जा सके। बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों के उत्थान के लिए देश की सरकार ने राष्ट्रीय बाढ़ प्रबंधन कार्यक्रम का आयोजन किया है। इस योजना के मुताबिक लोग अधिक से अधिक वृक्ष लगाएंगे। जो लोग निचले स्तर पर रहते हैं, उन्हें ऊपरी जगहों में बसाया जाएगा। सरकार हर वर्ष बाढ़ के लिए अलग बजट तैयार करती है। सरकार पहले से ही बाढ़ आने की घोषणा कर देते हैं ताकि लोग समय रहते अपने जरूरी सामग्रियों के संग सुरक्षित स्थान पर चले जाए।







नई पीढ़ी में धैर्य एवं सहनशीलता का अभाव



श्री विनोद कुमार

हिन्दी प्राध्यापक
हिन्दी शिक्षण योजना, शिलांग

वि ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास होने के कारण आज के युग में प्रत्येक क्षेत्र में बहुत तेजी से बदलाव देखने को मिलते हैं। ये बदलाव कभी तो हमारे समाज के लिए सकारात्मक होते हैं और कभी-भी बहुत ही नकारात्मक। तेजी से बदलती दुनिया को देखकर आज की युवा पीढ़ी के व्यवहार में भी वही परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। आज के युवाओं में धैर्य एवं सहनशीलता का अभाव देखा जा सकता है। आज के युवा हर काम को जल्दी एवं शॉर्ट कट तरीके से करने का रास्ता ढूंढते हैं, जबकि महान एवं सफल बनने का कोई शॉर्ट कट नहीं होता है। हमने देखा है कि हमारे देश में जितने भी महापुरुष हुये हैं चाहे वे भगवान राम हो, कृष्ण हों, बुद्ध हो, अब्दुल कलाम हों या फिर महात्मा गांधी हों सब के सब धैर्य एवं सहनशीलता की प्रतिमूर्ति थे।

नई पीढ़ी में धैर्य एवं सहनशीलता के अभाव के दुष्परिणाम समाज में देखने को मिलते हैं। छोटी-छोटी बातों पर लोगों से झगड़ना और बड़ों से अभद्र व्यवहार करना आज की युवा पीढ़ी की आदत में शुमार होता जा रहा है। हमेशा मारधाड़ वाली फिल्में और हिंसक विडियो गेम्स नई पीढ़ी को बचपन से ही आक्रामक बना रहे हैं। इसके अलावा आजकल एकल परिवारों में ज्यादातर दंपति कामकाजी होते हैं और उनके पास इतना समय नहीं होता कि वे अपने बच्चों में सहनशीलता और विनम्रता जैसे अच्छे संस्कार विकसित कर सकें। उन्हें धैर्यवान, सहनशील, संयमित और सुशिक्षित बनाने की जिम्मेदारी माता-पिता की होती है। इसलिए बच्चों की परवरिश के मामले में हर अभिभावक को सजगता बरतनी चाहिए क्योंकि आज के बच्चे ही देश का भविष्य हैं।





पहले हमारे परिवारों में बच्चों को संस्कारवान, धैर्यवान एवं सहनशील बनाने के लिए महापुरुषों की कहानियाँ सुनाई जाती थीं, नैतिकता की किताबें पढ़ाई जाती थीं, समाज और परिवार के लोग बच्चों को देश के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनाते थे। लेकिन आज की युवा पीढ़ी हिंसक फिल्में देखती है, हिंसक मोबाइल गेम्स खेलती है एवं सोशल मीडिया पर भड़काऊ पोस्टें पढ़ती है, जिससे उनमें हिंसक प्रवृत्ति पनप रही है। धैर्य की कमी के कारण जल्दी से जल्दी सफल होने के लिए युवा गलत रास्ते अपना रहे हैं, असफल होने पर निराशा एवं अवसाद का शिकार होकर अत्महत्या जैसे कदम उठा रहे हैं।

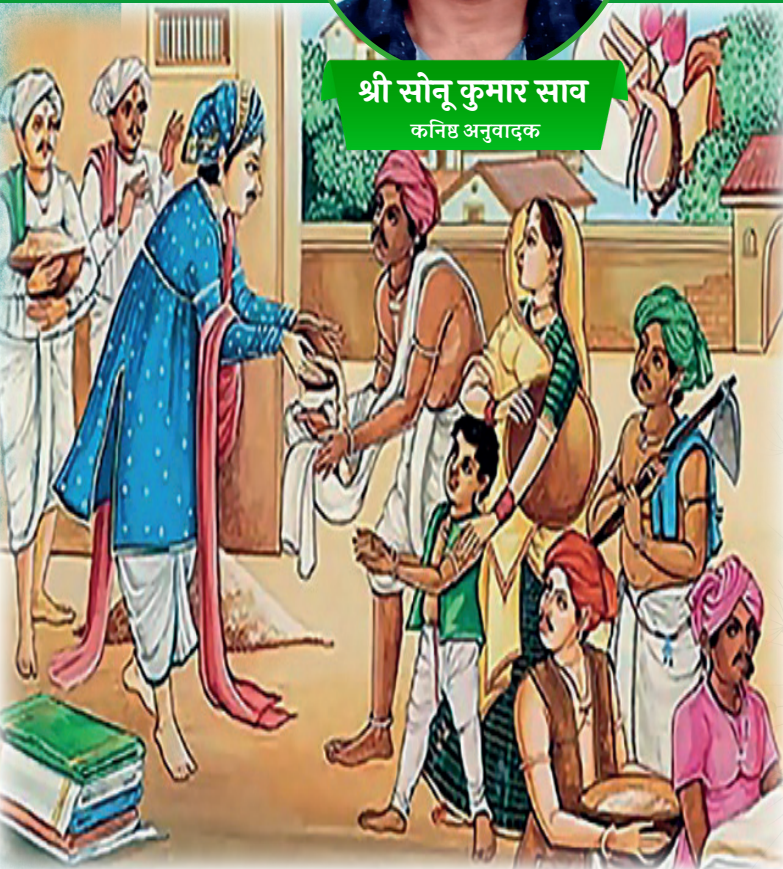
युवा हमारे देश का भविष्य हैं, युवाओं के पथभ्रष्ट या अवसादग्रस्त होने का अभिप्राय है कि हमारे देश का भविष्य सुरक्षित नहीं है। अतः हम सब की नैतिक जिम्मेदारी है कि अपने बच्चों को संस्कारवान बनाएँ, उनके अंदर धैर्य, दया, क्षमा, ईमानदारी, सहयोग, मेहनत आदि गुणों को विकसित करें। उन्हें मोबाइल आदि का प्रयोग कम से कम करने की सलाह दें, साथ ही महापुरुषों से संबन्धित अच्छा साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करें।





श्री सोनू कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

मनुष्य वर्णों एवं वर्गों में



सम्पूर्ण पृथ्वी असंख्य जीव-जन्तुओं का निवास स्थल है, तमाम तरह के जीवों में सबसे श्रेष्ठ प्रजाती मनुष्य योनी में होना माना गया है। रूप-रंग, चाल-ढाल, आकार-प्रकार, खान-पान एवं रहन-सहन के आधार पर प्रत्येक जीव-जन्तु अपने गुणों के आधार पर जलीय, स्थलीय एवं नभीय प्राणी के रूप में जाने जाते हैं, जिनमें से किसी की कोई सभ्यता, संस्कृति नहीं है। ये प्रकृति के नियमों के अनुसार बने-बनाएँ ढर्रे पर जीवन-यापन करते हैं, लेकिन धरती पर विराजमान जीवों में मनुष्य एक ऐसी प्रजाती है जिसने समय के साथ संघर्ष करते हुए स्वयं को आदिमानव से आधुनिक मानव के रूप में विकसित करने में सफलता प्राप्त की है और साथ ही स्वयं को वर्गों एवं वर्णों में बाँटकर एक-दूसरे के प्रति घृणात्मक भाव को भी विकसित किया है। वर्गों एवं वर्णों में विभाजित होने का सीधा अर्थ – जाति व्यवस्था एवं सामंती व्यवस्था से है। भारत में आर्यों के आगमन से ही जाति व्यवस्था कायम हुआ। इन आर्यों ने पश्चिमी एशिया से भारत में आक्रमण किया फिर रह बस गए और उन



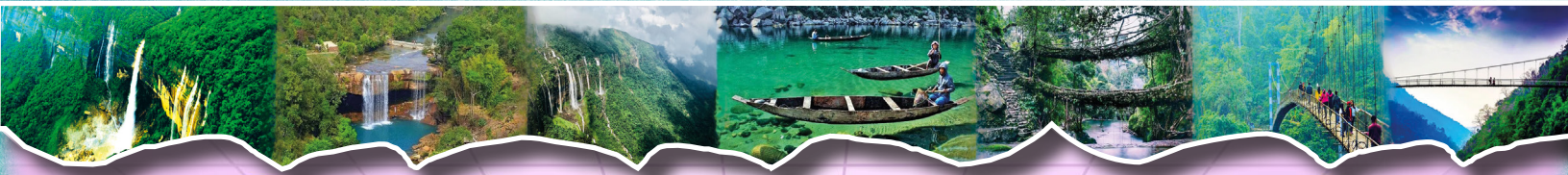


आर्यों में से ही एक मनु ऋषि ने अपने ग्रन्थ 'मनुस्मृति' में भारत की जाति-व्यवस्था को चार वर्णों में विभाजित कर दिया-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। इस तरह की दुर्नीति का परिणाम यह हुआ कि वहीं से दास-प्रथा चल पड़ी जबकि युरोप जैसे देशों में ई.पू. दासता की प्रथा ने समाज को मलिन कर रखा था जिसके जवाब में महान दार्शनिक अरस्तु ने 'वसीयतनामा' लिखी जो दास

प्रथा से मुक्ति का प्रथम घोषणा-पत्र मानी जाती है। वर्ण-व्यवस्था के विभाजन ने एक ऐसे तबके को अपने अधिकारों से वंचित रहने को वेवश कर दिया जिसके कारण वे सामान्य मनुष्य की बराबरी में जीवन-यापन करने से वंचित रह गए। प्रख्यात दार्शनिक प्लेटो ने कहा था - "दासता (गुलामी) मृत्यु से भी भयावह है"। गुलामी की पीड़ा ने शूद्रों को पशुओं से भी बदतर जीवन जीने को मजबूर किया। जिन शूद्र समुदाय को अन्य समुदाय घृणा की दृष्टि से देखता है उसे अस्पृश्य समझता है, उसकी परछाई को भी मलिन समझता है इन शूद्रों के कंधों पर और दलितों के हाथों पर ही यह पृथ्वी खड़ी है। पूरे विश्व की धरोहर ही दलितों-मजदूरों के हाथों से निर्मित-सृजित है। जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व को अपने खून-पसीने, परिश्रम से विकसित किया, वे अपने मूलभूत अधिकारों से वंचित रह गए। संसार में अगर कोई संघर्षशील समुदाय है तो वह शूद्र ही है। कभी कल्पना भी की जा सकती है सुअर जैसे जीव को भी पीने के पानी के लिए नहीं तड़पना पड़ता है लेकिन शूद्र एक ऐसा समुदाय है जो गाँव-समाज में पीने के लिए पानी नहीं मिलने पर मृत्यु को गले लगा लेता है। इस धरती पर जिसने भी जन्म लिया प्रकृति के नियम सबके लिए एक समान है, प्राकृतिक स्रोत भी है जो सबके जीवन में समान प्रभाव डालते हैं फिर सामाजिक असमानताएँ क्यों? ये असमानताएँ मानसिक बिमारी नहीं तो और क्या हैं? हमने वैदिक काल से 21वीं सदी में तो प्रस्थान कर लिया लेकिन जातिवादी कट्टरपंथी रवैया आज भी विद्यमान है। दलित महानायक बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के संघर्ष प्रयत्नों से दलितों की सामाजिक स्थिति में कुछ स्तर पर सुधार हुआ। दलितों ने संघर्ष-प्रयत्न से शिक्षा को अपना हथियार बनाया और समाज में समान अधिकार से जीवन-यापन करने के लिए प्रयत्नशील हो गए।

ब्राह्मण बनाम शूद्र
पुष्यमित्र शुंग
उर्फ
भगवान राम





जिम की लोकप्रियता

श्रीमती मधु कुमारी गुप्ता

पत्नी - श्री रीतेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आज, देश में जिम और फिटनेस उद्योग फल-फूल रहा है, जिसमें कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी इस खंड में बढ़ रहे हैं। कुछ हद तक, इस उछाल का श्रेय बॉलीवुड अभिनेताओं और दवाओं को जाता है, जो स्क्रीन पर अपने अच्छी तरह से तैयार शरीर और मांसपेशियों को दिखाते हैं और कई युवाओं को प्रेरित करते हैं। हालांकि, देश में फिटनेस जिम की लोकप्रियता के पीछे कई अन्य प्रमुख कारक हैं।

- बढ़ती स्वास्थ्य और फिटनेस जागरूकता : इन दिनों, लोगों की बढ़ती संख्या जिम जा रही है ताकि उनकी व्यस्त शहरी जीवन शैली के दुष्प्रभावों का मुकाबला किया जा सके। यह आवश्यक भी है। वास्तव में, व्यायाम हृदय की फिटनेस को बढ़ाता है और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ाता है। साथ ही नियमित व्यायाम तनाव, चिंता और अवसाद और स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाली अन्य बीमारियों को कम करने में मदद करता है।
- फिटनेस के लिए उम्र कोई बाधा नहीं है : कई स्रोतों जैसे डॉक्टर, शोधकर्ता आदि के माध्यम से हमें लगातार व्यायाम के लाभों के बारे में याद दिलाया जाता है, जो सही भी है। हर आयु वर्ग के लोगों को, 20 से 60 के दशक और उसके बाद, फिट रहने के लिए कड़ी मेहनत करने की जरूरत है। साथ ही, यह भी ध्यान में रखने की जरूरत है कि अलग-अलग उम्र में मानव शरीर की अलग-अलग आवश्यकताएँ होती हैं और उम्र बढ़ना जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है। इसे महसूस करने और इस तथ्य के साथ आने के बाद कि जो लोग नियमित रूप से व्यायाम करते हैं, वे उन लोगों की तुलना में अधिक खुश और स्वस्थ होते हैं, जो लोग जिम में तेजी





से बढ़ रहे हैं।

- अंतर्राष्ट्रीय ब्रांडों का प्रवेश : मोटापे और मधुमेह के बढ़ते मामलों ने भारतीय फिटनेस उद्योग में क्रांति ला दी है। अगर हम अपने आस-पास देखें तो पाएंगे कि वजन घटाने के विज्ञापन हर जगह हैं। यह देश में स्वास्थ्य क्लबों और जिम की सदस्यता के बढ़ने के मुख्य कारणों में से एक है। स्वास्थ्य देखभाल के लिए एक निवारक दृष्टिकोण ने न केवल सेवाओं बल्कि उत्पादों की मांग में भी वृद्धि की है। बड़ी और स्थापित फिटनेस चेन और जिम अपने उत्पादों और सेवाओं के पोर्टफोलियो का विस्तार कर रहे हैं ताकि हर संभव तरीके से बाजार में प्रवेश कर सकें और संभावित ग्राहकों तक पहुँच सकें।
- जिम संस्कृति का विकास : जिम संस्कृति जो वर्तमान में भारत में शेषावस्था में है, बहुत तेज गति से बढ़ रही है क्योंकि अधिक से अधिक लोग महान स्वास्थ्य और लंबे जीवन के लिए जिम आंदोलन में शामिल हो रहे हैं। दरअसल, महानगरों और टियर-II शहरों में बड़ी संख्या में भारतीय तेजी से स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो रहे हैं और उन्होंने जिम जाना शुरू कर दिया है। जबकि शहरी क्षेत्रों और महानगरों में जिम की संस्कृति स्पष्ट है, इसे अभी भी देश के टियर- III शहरों और छोटे शहरों और गांवों में पकड़ने की जरूरत है। खैर, धीरे-धीरे वे जिम संस्कृति को अपना रहे हैं और लोगों के लिए स्वस्थ जीवन जीने के लिए जिम तेजी से एक आवश्यकता बनते जा रहे हैं।
- वैयक्तिकृत स्वास्थ्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों की उपलब्धता : वर्तमान समय में, लोग अच्छा दिखने और महसूस करने के लिए काफ़ी बड़ी राशि खर्च करने में संकोच नहीं करते हैं। जिम जाने वालों की भारी संख्या इस प्रवृत्ति का प्रमाण है। हालांकि, हर कोई नहीं जानता कि क्या व्यायाम करना है, कैसे करना है, कब करना है, क्या खाना है आदि। यहां व्यक्तिगत फिटनेस प्रशिक्षण कार्यक्रम की भूमिका आती है। लोगों को व्यक्तिगत प्रशिक्षक की आवश्यकता के अन्य सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक यह है कि वे जवाबदेही और ईमानदारी लाने में मदद करते हैं।
- व्यक्तिगत डिस्पोजेबल आय में वृद्धि : पहले फिटनेस पर खर्च करना और जिम की मेंबरशिप लेना एक लक्ष्मी माना



जाता था, लेकिन अब यह लोगों की लाइफस्टाइल का हिस्सा बन गया है। बढ़ते शहरीकरण, बढ़ते मध्यम वर्ग और बढ़ती प्रयोज्य आय जिम की आवश्यकता को बढ़ा रहे हैं। इसके अलावा, चूंकि युवा कामकाजी उम्र की आबादी पर्याप्त डिस्पोजेबल आय के साथ एक गतिहीन जीवन शैली का नेतृत्व कर रही है, जिससे विभिन्न बीमारियों को आकर्षित किया जा रहा है, जिम की मांग केवल उत्तर की ओर बढ़ने की उम्मीद है।

- स्वास्थ्य और स्वास्थ्य पर सरकारी आवंटन में भारी वृद्धि : हाल के वर्षों में, स्वास्थ्य सेवा राजस्व और रोजगार दोनों के मामले में भारत के सबसे बड़े क्षेत्रों में से एक बन गया है। हेल्थकेयर में अस्पताल, चिकित्सा उपकरण, नैदानिक परीक्षण, आउटसोर्सिंग, टेलीमेडिसिन, चिकित्सा पर्यटन, स्वास्थ्य बीमा और चिकित्सा उपकरण शामिल हैं। कुल बाजार में से फिटनेस और स्लिमिंग उद्योग में 60 अरब रुपये शामिल हैं। फिटनेस उपकरण भी फोकस में एक प्रमुख खंड बनाते हैं। इस खंड में जिम उपकरण जैसे डम्बल, ट्रेडमिल आदि के खुदरा और थोक विक्रेता शामिल हैं। यहां तक कि जिम के रूप में फिटनेस सेवा को भी सरकार से एक बड़ा बढ़ावा मिला है।

उपरोक्त सभी कारकों के परिणामस्वरूप, देश में जिम और फिटनेस उद्योग वर्तमान में उज्ज्वल दिन देख रहा है और आगे भी सुनहरे दिन हैं। हर साल 20-30 प्रतिशत की दर से बढ़ने की ओर अग्रसर, इस उभरते उद्योग में इस खंड में स्थापित और उभरते खिलाड़ियों के लिए पर्याप्त विकास के अवसर हैं।

प्लास्टिक

वरदान या अभिशाप



सुश्री शाहनाज बेगम

बहन – मुहम्मद जियाऊल हक
वरिष्ठ अनुवादक

कहते हैं कि ईश्वर हर जगह विद्यमान है लेकिन ऐसा लगता है की प्लास्टिक ने उनकी जगह ले ली है, दुनिया का कोई भी ऐसा कोना नहीं है जहाँ प्लास्टिक ने विनाश न मचाया हो फिर चाहे वो धरती, वायु, और जल ही क्यों न हो। प्लास्टिक का प्रयोग न केवल हमारे लिए अपितु पर्यावरण के लिए भी विनाशकारी साबित हो रहा है। एक तरफ तो वो वातावरण को प्रदूषित कर रहा है और दूसरी तरफ धरती के भीतर जल को। प्लास्टिक के जलाने से उत्पन्न धुएँ से ओजोन परत को भी काफी नुकसान होता है जिसके परिणामस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग जैसी कठिन समस्या का सामना करना पड़ रहा है।



वास्तव में सिंगल यूज प्लास्टिक (जैसे कि प्लास्टिक की गिलास, प्लेट, प्लास्टिक की बोतल, स्ट्रॉ इत्यादि) ही इस समस्या का सबसे बड़ा कारण बना हुआ है। ये दिखते तो बहुत छोटे से हैं पर इनका प्रभाव बहुत ही विनाशकारी होता है क्योंकि ये दुबारा किसी भी तरह से उपयोग में लाये नहीं जा सकते हैं, इसकी प्रवृत्ति कुछ ऐसी है कि यदि यह पृथ्वी पे रहा तो जानवरों के पेट से लेकर नदी-नालों को जाम कर देगा और यदि इसे जलाया गया तो इससे उत्पन्न धुआँ वातावरण को प्रदूषित कर देगा।



भारत के बहुत से ऐसे राज्य जैसे उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, बिहार, गुजरात, झारखण्ड, ओडिशा हैं जिन्होंने प्लास्टिक पे प्रतिबन्ध लगा दिया है, फिर भी सरकारें पूर्ण रूप से इसके उपयोग होने को रोक नहीं पा रही हैं। लोग चोरी-छुपे इसका प्रयोग कर रहे हैं। भारत का ही एक राज्य है सिक्किम जहाँ पे प्लास्टिक प्रतिबन्ध को गंभीरता से सरकार एवं उस राज्य के नागरिकों द्वारा लिया गया और आज सिक्किम प्लास्टिक मुक्त राज्य हो गया है, हालांकि सिक्किम की जनसंख्या और राज्यों की अपेक्षा कम है फिर भी अगर आप किसी भी कार्य को करने के लिए दृढ़ संकल्प ले तो आप निश्चित रूप से उस कार्य को कर जायेंगे फिर चाहे वो कितना भी मुश्किल क्यों न हो और वो इस राज्य ने कर दिखाया।

आज हमें भी इसी दृढ़ संकल्पता की ज़रूरत है इस समस्या से लड़ने के लिए यही सही समय है, यदि समय हमारे हाथ से अभी निकल गया तो हम इस समस्या को महामारी का रूप लेने से नहीं रोक पाएंगे। अतः हमारा कर्तव्य ही नहीं अपितु धर्म भी है कि हम इस पहल में अपना प्रभावी योगदान दे। हमने जो स्वच्छ भारत का सपना देखा है उसको साकार करने के लिए सर्वप्रथम हमें अपने देश को प्लास्टिक मुक्त करना होगा अन्यथा ये सपना एक कोरी कल्पना मात्र रह जायेगा। हम हमेशा ये मान के चलते हैं कि ये सब करना सरकार का काम परन्तु हमें ये ज्ञात होना चाहिए की सरकार को तो हमने ही चुना है, एक देश का नागरिक होने के नाते इस गंभीर संकट से लड़ने की जिम्मेदारी हम सब की है।



भारत एक सौ तीस करोड़ जनसंख्या वाला देश है, जहाँ प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का प्रयोग करना लोगों की आवश्यकता भी है और मजबूरी भी। भारत में प्लास्टिक पे एकदम से प्रतिबन्ध लगाना मुश्किल तो है पर असंभव नहीं। यह कार्य एक सुनियोजित तरीके से ही किया जा सकता है यदि हम स्वयं से ही सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग करना बंद कर दे तो काफ़ी हद तक हम इस समस्या पर विजय प्राप्त कर पाएँगे जो फिलहाल अजेय प्रतीत हो रही है।

अंततः मैं, यही कहना चाहूंगी की प्लास्टिक न केवल मनुष्य जाति अपितु समस्त जीव-जन्तुओं के लिए बहुत हानिकारक है और इसकी रोक थाम से ही इससे निजात पायी जा सकती है। आज देश के हर नागरिक को प्लास्टिक के उपयोग से बचना चाहिए तभी इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है।





मीडिया के शिकंजे में फंसते बच्चे

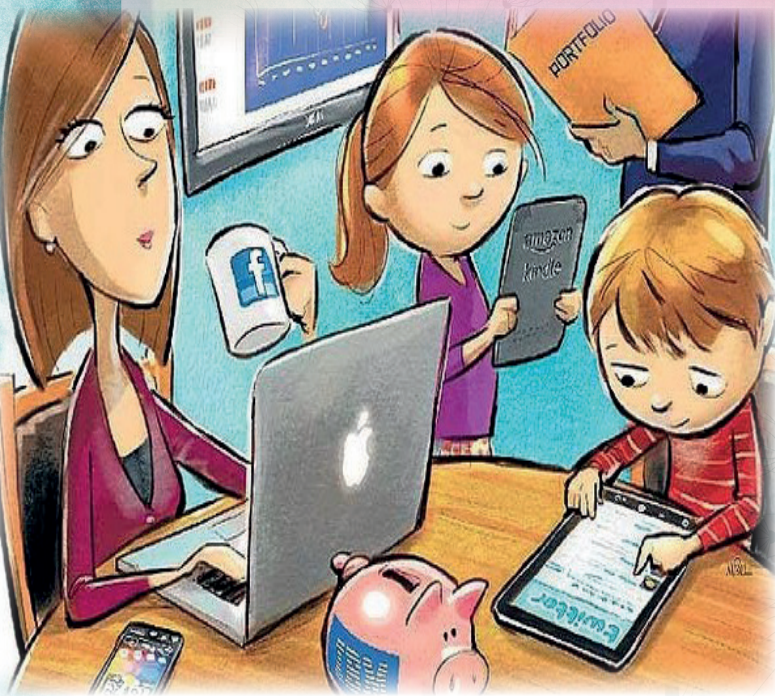


श्रीमती तारा देवी सुनार

बहन – श्री पदम लाल सुनार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सोशल मीडिया ने आज के दौर में हमारे जीवन को काफी प्रभावित किया है। मीडिया के बढ़ते वर्चस्व का बोलबाला आज हर जगह है। यह हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। जब हम बच्चों की बात करते हैं तो ये भी मीडिया के प्रभाव से अछुते नहीं हैं। बच्चों का कोमल व अपरिपक्व मन मीडिया के मकड़जाल में जल्दी फंसता है। वे सही गलत का आकलन नहीं कर पाते हैं। सोशल मीडिया के कई फायदे भी हैं। यह शिक्षा के लिए अच्छा उपकरण है। इससे बच्चे अपने दूर के रिश्तेदारों तथा दोस्तों से कनेक्ट हो सकते हैं। सोशल मीडिया की मदद से कई मुद्दों पर बच्चों की बेहतर विचारधारा विकसित हो सकती है। साथ ही कम्यूनिकेशन स्किल्स भी अच्छे होते हैं। सोशल मीडिया ने आज बच्चों को एक विस्तृत संसार दिया है जिसे बच्चे सबकुछ समझने लगे हैं। इंटरनेट की दुनिया एक छोटी सी बटन पर सिमट गई है। छोटे-बड़े कामों के लिए बच्चे आज इंटरनेट पर निर्भर हैं। इसी कारण बच्चों का मानसिक विकास कम हो गया है। बच्चे मेहनत से दूर भागते हैं।

आज सोशल मीडिया के अनेक रूप हैं। ये सभी को अपनी प्रतिभा निखारने का एक अच्छा प्लेटफॉर्म देती है। टी.वी. चैनल्स, यू-ट्यूब, इन्स्टाग्राम, फेसबुक आदि का उपयोग कर हर कोई अपनी प्रतिभा उजागर कर सकता है। इससे बच्चे आत्मविश्वासी और मुखर बन रहे हैं।





सोशल मीडिया के नकारात्मक पहलू भी बहुत हैं, जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। बच्चे इसकी गिरफ्त में जल्दी आ जाते हैं। मीडिया का सबसे नकारात्मक रूप यह है कि इसने अपने विभिन्न माध्यम से बच्चों को उम्र से अधिक परिपक्व बना दिया है। कार्टून चरित्रों द्वारा बोले जाने वाले अपशब्दों और भद्दा मजाक से बच्चे मानसिक तौर पर दुर्बल बन रहे हैं। कार्टून चैनल्स बच्चों को नैतिक मूल्य सिखाना तो दूर, उन्हें आक्रामक हिंसक व कामचोर बना रहे हैं। आज लगभग सभी बच्चा चाहता है कि उसके पास भी डोरेमोन हो जो सारी समस्या का हल निकाल सके। इससे बच्चे मानसिक रूप से मेहनत करने के लिए तैयार नहीं रहता। यही नहीं, टी.वी. पर आने वाले कार्यक्रमों में दिखाई जाने वाली अधिकांश सामग्री ने बच्चों को उम्र से अधिक बड़ा कर दिया है। बच्चों से उनका बचपन तो छीना ही है साथ ही जीवन के प्रति उनकी सोच पर भी कब्जा जमा लिया है।

सोशल मीडिया की चमत्कारी दुनिया इतना बड़ा है कि बच्चा कब, कहा और कैसे जानकारी लेता है, हम कंट्रोल नहीं कर पाते। हर साल कई बच्चे साइबर बुलिंग के शिकार होते हैं। फेसबुक, ट्विटर जैसे सोशल साइट्स ने बच्चों से शाम के खेलने का समय छीन लिया है। फेसबुक पर चिपके बच्चों की दुनिया इतनी डिजीटलाइज हो गई है कि उन्हें यह सपनीली दुनिया ही अच्छी लगती है। वास्तव में उनकी जिन्दगी की चाबी थामे ये सोशल साइट्स उन्हें असल जिन्दगी में सोशल बनाने में विफल हो रहे हैं। आज अधिकांश बच्चों की दुनिया मोबाइल फोन में सिमटकर रह गई है। बाहर खेलने-कुदने, कुछ क्रियेटिव करने के बजाय आजकल बच्चे अपना कीमती समय ऑनलाइन गेमिंग, रील्स बनाने में ही गँवाते हैं। इससे उनके स्कूल के प्रदर्शन, मानसिक स्वास्थ्य तथा व्यक्तिगत विकास भी प्रभावित हो रहा है। अभिभावक अगर जागरूक होकर बच्चों का उचित मार्गदर्शन करें



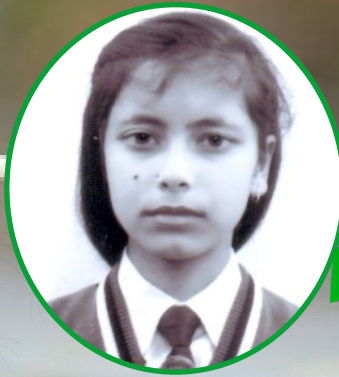
तो सोशल साइट्स के नकारात्मक प्रभाव से उन्हें बचाया जा सकता है। अगर बच्चा टी.वी. देख रहा है तो माता-पिता ध्यान दे कि वह उनकी निगरानी में टी.वी. देखे। उन चैनल्स को लॉक करना उचित होगा जो व्यस्कों की श्रेणी में आते हैं। हर अभिभावक की यही कोशिश होनी चाहिए कि बच्चों के साथ क्वालिटी टाइम बिताए, उन्हें घर में एक स्वस्थ व शांतिपूर्ण माहौल प्रदान करें।

सोशल मीडिया आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। कोई भी चीज बुरी नहीं होती, जब तक हम उसकी अति न कर दें। तकनीक का सही उपयोग जरूरी है। यहाँ सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही तरह की सामग्री के बीच स्वयं का तालमेल बिठाना जरूरी है। माता-पिता के संरक्षण एवं उचित देखभाल से बच्चों को सही दिशा दिखाया जा सकता है। आखिर परवरिश में माता-पिता की भूमिका मीडिया से अधिक है।





चार फुँदनों वाली टोपी



सुश्री अमृता दास

बेटी - श्री सुजीत कुमार दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

विशु की नानी ने उसे टोपी बुनकर दी। ऊन की चार फुँदनों वाली टोपी। विशु ने पहनी तो खुश हो गया। बोला “नानी! टोपी तो बहुत अच्छी हैं। इसे पहनकर तो मैं, बिलकुल राजकुमार बन गया।” यह सुनते ही नानी की हँसी छूट गई। अगले दिन विशु टोपी पहनकर स्कूल गया। वह बड़ा खुश था। फिर जैसे ही मौका मिला, क्लास के बच्चे इकट्ठे होकर कहने लगे – “देखो-देखो, विशु की अजीब सी टोपी! चार फुँदनों वाली टोपी!” विशु घर आया तो रोनी सुरत बनाकर नानी से बोला - “क्लास के बच्चे मेरा मजाक उड़ा रहे थे। आप ऐसा करो, एक फुँदना कम कर दो।”

अगले दिन विशु टोपी पहनकर गया तो फिर वही मुसीबत। विशु ने नानी से कहकर फिर एक और फुँदना कटवाया। इस प्रकार होते-होते टोपी में सिर्फ एक फुँदना बाकी रहा। तो भी बच्चे चिढ़ाए बगैर नहीं मान रहे थे। आखिर में विशु ने कहा - “नानी! नानी! आप यह फुँदना भी काट दो।” अगले दिन विशु बिना फुँदने की टोपी पहनकर गया। बच्चे तालियाँ पीट-पीटकर चिल्लाने लगे, “देखो-देखो, विशु की बेढंगी टोपी! बिना फुँदने की टोपी!”

स्कूल से आकर विशु ने रोते-रोते नानी को सब बात बताई। नानी हँसते हुए बोली - “बेटा, तुम चिढ़ते हो इसलिए सब चिढ़ते हैं। तुम चिढ़ना छोड़ दो। फिर सब ठीक हो जाएगा।” विशु ने नानी की यह बात याद रखी। विशु अब खुश था। हाँलाकि उसे टोपी के चार फुँदनों की अभी याद आती थी। वह मन ही मन सोचता - कितने अच्छे लगते थे वे फुँदने। बेकार में नानी से कहकर कटवाया।





श्रीमती मुमताज बेगम

पत्नी - मुहम्मद जियाउल हक
वरिष्ठ अनुवादक

भारत की सामाजिक समस्याएँ

यद्यपि भारत वर्ष में विभिन्नता में एकता कायम है तथापि हमारे देश में साम्प्रदाय जाति, क्षेत्रीय भाषा, दर्शन, बोली, खान-पान, पहनावा-ओढ़ावा, रहन-सहन और कार्य कलाप की विभिन्नताएँ एक छोर से दूसरे छोर तक फैली हुई हैं। यहाँ हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध, सनातन इत्यादि सभी स्वतंत्रतापूर्वक रहते हैं। हिन्दु, मुस्लिम, सिख, जैन, पारसी इत्यादि जाति और सम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं। यहाँ का धरातल कहीं पर्वतीय है, तो कहीं समतल है, तो कहीं पठारी है और कहीं तो घने-घने जंगलों से ढका हुआ है। भाषा की विविधता भी हमारे देश में फैली है। हमारे देश में कई भाषाएँ हैं और इससे कहीं अधिक उपभाषाएँ या बोलियाँ हैं। खान-पान, पहनावे आदि की विभिन्नता भी देखी जा सकती है। कोई चावल खाना पसन्द करता है तो कोई गेहूँ, कोई मांस-मछली चाहता है तो कोई फल-सब्जियों पर ही प्रसन्न रहता है। इसी तरह से विचारधारा

भी एक दूसरे से नहीं मिलती है।

इन विभिन्नताओं के परिणामस्वरूप हमारे देश में कभी बड़े-बड़े दंगे फसाद खड़े हो जाते हैं। इनके मूल में प्रान्तीयता, भाषावाद, सम्प्रदायवाद या जातिवाद ही होता है। इस प्रकार से हमारे देश की ये सामाजिक बुराई राष्ट्रीयता में बाधा पहुँचाती है। अंधविश्वास और रूढ़िवादिता हमारे देश की भयंकर सामाजिक समस्या है। कभी किसी अपशकुन जो अंधविश्वास के आधार पर होता है। इससे हम कर्महीन होकर भाग्यवादी बन जाते हैं।

नारी के प्रति अत्याचार, दुराचार, भ्रष्टाचार या बलात्कार का प्रयास करना हमारी एक लज्जापूर्ण सामाजिक समस्या है। इससे हमारी सामाजिक मान्यता का हास हुआ है, फिर भी हम चेतन नहीं हैं। दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों को जन्म कर नारी को बेरहम कष्ट देते हैं। उसे पीड़ित करते हैं। भ्रष्टाचार हमारे देश की सबसे

बड़ी सामाजिक समस्या है, जो कम होने या घटने की अपेक्षा यह दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। कालाधन, काला बाजार, मुद्रा-स्फीति, महँगाई आदि सब कुछ भ्रष्टाचार की जड़ से ही पनपता है। अगर निकट भविष्य में इस भ्रष्टाचार को रोकने के लिए हमने प्रयास नहीं किया तो यह निश्चय हमारी बची खुशी सामाजिक मान्यताओं को निगलने में देर नहीं लगायेगी।

छूआछूत, जातिवाद और भाई-भतीजावाद हमारी सामाजिक समस्याओं की रीढ़ है। इस प्रकार की सामाजिक समस्याओं के कारण ही सामाजिक विषमता बढ़ती जा रही है। इसी के फलस्वरूप हम अभी तक रूढ़िवादी और संकीर्ण मनोवृत्तियों के बने हुए हैं और चतुर्दिक विकास में पिछड़े हुए हैं। अशिक्षा और निर्धनता भी हमारी भयंकर सामाजिक समस्याएँ हैं। इनसे हमारा न तो बौद्धिक विकास होता है और न शारीरिक विकास ही।

धोनी का टिकट कलेक्टर से देश की धड़कन बनने तक का सफर

श्री राजेन्द्र प्रसाद

पिता - श्री रीतेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



एम.एस. धोनी का जन्म रांची, बिहार (अब झारखंड में) में हुआ था। उनका पैतृक गांव लावली उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के लमगाड़ा ब्लॉक में है। धोनी के माता-पिता नौकरी के सिलसिले में उत्तराखंड से रांची आ गए, जहां उनके पिता पानसिंह मेकॉन (MECON) में जूनियर मैनेजमेंट के पद पर काम करते थे।

धोनी को एक बहन और एक भाई है। बहन का नाम जयंती गुप्ता और भाई का नाम नरेंद्र सिंह धोनी है। धोनी ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज विकेट कीपर एडम गिलक्रिस्ट के फैन हैं। धोनी बचपन से महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर, बॉलीवुड अभिनेता अमिताभ बच्चन और महान गायिका लता मंगेशकर को अपना आदर्श मानते हैं। धोनी ने डी.ए.वी. जवाहर विद्या मंदिर, श्यामली, रांची, झारखंड से पढाई की है।

धोनी ने शुरुआत में स्कूल के दौरान बैडमिंटन और फुटबॉल में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और इन खेलों में जिला और क्लब स्तर पर चुने गए। धोनी स्कूल में अपनी फुटबॉल टीम के गोलकीपर थे और उन्हें उनके फुटबॉल कोच ने एक स्थानीय क्रिकेट क्लब के लिए क्रिकेट खेलने के लिए भेजा गया था। इस दौरान धोनी ने अपने विकेट





कीपिंग के कौशल से प्रभावित किया और कमांडो क्रिकेट क्लब (1995-1998) में नियमित विकेट कीपर बने। क्लब क्रिकेट में उनके प्रदर्शन के आधार पर उन्हें 1997/98 सीजन के वीनू मांकड़ ट्रॉफी अंडर-16 चैम्पियनशिप के लिए चुना गया और उन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया। आपको जानकर हैरानी होगी कि धोनी ने 10वीं क्लास के बाद क्रिकेट को सीरियस लिया। बता दें कि धोनी खड़गपुर रेलवे स्टेशन पर 2001 से 2003 तक ट्रेवलिंग टिकट एग्जामिनर (TTE) थे।

धोनी ने अपनी बचपन की दोस्त साक्षी के साथ 4 जुलाई 2010 को देहरादून के एक फार्म हाउस में शादी के बंधन में बंधे। इस शादी में क्रिकेट और मनोरंजन की दुनिया के कई स्टार शामिल हुए थे। 2015 में धोनी और साक्षी के घर एक नन्ही परी का जन्म हुआ, जिसका नाम जीवा रखा। जीवा सोशल मीडिया पर काफी लोकप्रिय है। आए दिन जीवा की वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होती रहती है।

धोनी ने 18 वर्ष की उम्र में 1999-2000 के सत्र में बिहार के लिए रणजी ट्रॉफी की शुरुआत की। उन्होंने अपने डेब्यू मैच में असम क्रिकेट टीम के खिलाफ दूसरी पारी में 68 रन की अर्ध शतकीय पारी खेली। हालांकि बाद में विभाजन के बाद धोनी झारखण्ड की ओर रणजी खेलने लगे। धोनी ने दिसंबर 2004 में बांग्ला देश के खिलाफ एक दिवसीय मैच में डेब्यू किया और अपना पहला टेस्ट एक साल बाद श्रीलंका के खिलाफ खेला। धोनी भारत के पहले टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच

का हिस्सा थे। उन्होंने दिसंबर 2006 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ डेब्यू किया।

महेंद्र सिंह धोनी को कप्तान बनाने में राहुल द्रविड़ और सचिन तेंदुलकर का बहुत बड़ा हाथ था। धोनी को भारतीय टीम की कप्तानी दिलवाने के लिए राहुल द्रविड़ और सचिन तेंदुलकर ने बाद बी.सी.सी.आई. से बात की थी जिसके बाद बी.सी.सी.आई. ने धोनी को साल 2007 में भारतीय टीम का कैप्टन बनाया था। भारत के कप्तान बनने के बाद सितंबर 2007 में दक्षिण अफ्रीका में आयोजित हुए आई.सी.सी. विश्व टी-20 में इन्होंने भारतीय टीम को लीड किया था और इस टूर्नामेंट को जीत हासिल करवाने में मदद की थी।

विश्व टी-20 कप जीतने के बाद धोनी को वन डे मैच और टेस्ट मैच की भी कप्तानी सौंप दी गई थी और धोनी ने अपनी जिम्मेदारी को सच्ची ईमानदारी और कर्तव्य निष्ठा के साथ निभाया था। धोनी की कप्तानी के तहत ही टीम इंडिया ने साल 2009 में आई.सी.सी. टेस्ट रैंकिंग में पहला स्थान हासिल किया था इसके साथ ही क्रिकेट के धुरंधर बल्लेबाज धोनी ने कप्तान रहते हुए कई रिकॉर्ड भी अपने नाम किए थे। धोनी ने दो वर्ल्ड कप में भारत का नेतृत्व किया है और अपनी कप्तानी के तहत टीम इंडिया ने साल 2011 में विश्व कप भी जीता था। जबकि साल 2015 में हुए विश्व कप में भारत को सेमी फाइनल तक पहुंचाने में भी उपलब्धि हासिल की थी। भारतीय क्रिकेट इतिहास में धोनी का नाम हमेशा गर्व और सम्मान के साथ याद किया जाएगा।





परिस्थितियाँ और विचार



श्री सुमित कुमार वर्मा

भाई - श्री अमित कुमार वर्मण
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प रिस्थितियाँ हमेशा सकारात्मक और अपने अनुकूल नहीं होती। इस तरह से दुनिया बनाई गई है कि ऐसा लगता है मानो इसे कुदरत के विश्वविद्यालय के रूप में नियोजित किया गया है। कई बार ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जब जीवन हमारी कठिन से कठिन परीक्षा लेती है। जब कठिन परिस्थितियाँ हमारे सामने आती हैं। सवाल यह है कि आप उस समय कैसे प्रतिक्रिया देना चाहेंगे। हमारा यह मन विचारों को बनाने का कारखाना है। विचार ऊर्जा के सूक्ष्म बण्डल हैं, जो हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। जो निर्धारित करता है कि हम कैसे विभिन्न परिस्थितियों में क्रिया करेंगे। विचार हमारे सुख और दुःख दोनों का निर्धारण करता है। इसलिए हमें खुश रहने के लिए अपने विचारों पे नियंत्रण रखते हुए अच्छे कार्यों को करना चाहिए, साथ ही हमें अच्छा इंसान बनने का प्रयास करना चाहिए। हमें आत्मचिंतन करने की जरूरत है ताकि आत्मशुद्धि हो सके हमारे विचारों की। इसलिए यह जरूरी है कि हम अपने विचारों को व्यवस्थित और सुचारु रूप से नियंत्रित करें। विचारों की परिस्थितियों को नियंत्रित करने के लिए यह अति आवश्यक है कि हम पर्यावरण ओर अपने विचारों के बीच के अंतर को समझें। प्रायः हम इसे नहीं समझते जिससे परिस्थितियाँ कई बार हम पर हावी हो जाती हैं और हम उन परिस्थितियों और विचार के जाल में इस प्रकार उलझ जाते हैं कि फिर इससे बाहर निकलना असंभव सा लगता है। हम सोचने के लिए मजबूर हो जाते हैं कि कठिन परिस्थितियाँ हमें अंदर से तोड़ने या परेशान करने आयी हैं, पर हम ये भूल जाते हैं कि परिस्थितियाँ ही हमारे विचार का निर्धारण करती हैं, जिसका आत्मसात कर हम कठिन से कठिन परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।



हवा और सूरज

श्रीमती अपर्णा रानी दास

पत्नी - श्री सुजीत कुमार दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बहुत पहले की बात है, तब हवा और सूरज में खूब अच्छी दोस्ती थी। पर एक दिन हवा और सूरज में बहस छिड़ गई। हवा कह रही थी - “मैं बड़ी हूँ।” अब कौन फैसला करे कि दोनों में कौन बड़ा है? इतने में दोनों को दूर सड़क पर चलता एक राहगीर दिखाई दिया। अचानक सूरज के मन में एक बात आई। बोला - “सुनो हवा, जो इस राहगीर का कुरता उतरवा दे, समझो कि वह बड़ा है। क्या तुम तैयार हो अपनी ताकत आजमाने के लिए?”

हवा बोली - “हाँ, जरूर।” पहले हवा ने अपनी ताकत आजमाई। अभी थोड़ी देर पहले तो धीरे-धीरे सुहावनी हवा चल रही थी, पर देखते ही देखते खूब जोर की आँधी चलने लगी। सड़क पर चलते राहगीर ने कसकर अपने कपड़े पकड़ लिया, ताकि वे आँधी में उड़ न जाएँ। अब हवा को गुस्सा आया। उसने और भी तेजी दिखाई। पर राहगीर ने अब कपड़े और भी कसकर पकड़ लिए थे। फिर भला वे कैसे उड़ पाते? हवा थक कर बोली - “सूरज दादा, मैं, तो सफल नहीं हो सकी। अब आप अपनी ताकत आजमाइए।”

सूरज ने भी अपना प्रचंड रूप दिखाना शुरू किया। देखते ही देखते खूब गरमी पड़ने लगी। राहगीर पसीने-पसीने हो गया। उसने झट अपना कुरता उतारा और कंधे पर रख लिया। फिर उसी तरह आगे चल पड़ा। इसे हवा ने भी देखा और सूरज ने भी। हवा बोली - “आज मैं समझ गई सूरज दादा, आप ही बड़े हो।”

फिर हवा और सूरज दोनों एक साथ हँस दिए। उनके मन का सारा मैल बह गया था। दोनों की दोस्ती और भी पक्की हो गई।





सफेद गुलाब का गुलदस्ता

श्रीमती लेविस नामप्नी

भाभी - श्रीमती एल. थिएते
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्रुति कार्यालय पहुँची, सबसे पहले उसने घड़ी की ओर देखा तो आठ मिनट बचे थे दस बजने को। तब उसने चैन की साँस खींची। आज उसका प्रथम दिन था और वह समय से पहले पहुँचना चाहती थी। उसे मैनेजर (प्रबंधक) का पी.ए. (निजी सहायक) का स्थान में चुना गया था। विनम्रता से उसने अपने सहकर्मी को अपना परिचय दिया और सलाह इकट्ठा करने का प्रयत्न किया। तब शीला ने उसे समझाया कि श्रुति को एक बात का हमेशा ध्यान रखना था – मैनेजर के मेज पर रोज सफेद गुलाब, फूलदान में खिलना जरूरी था। प्रश्न पूछे बिना श्रुति ने अपना काम आरम्भ किया। मैनेजर के मेज पर सफेद गुलाब पहले से सजाया हुआ देखा। काम का आज पहला दिन था, श्रुति पुरा मन लगा कर काम करती गई और जल्द ही छुट्टी हो गई। वह खुश थी कि पहला दिन कार्यालय में कोई असुविधा नहीं हुई।

अगले दिन श्रुति ने फिर जल्दी पहुँचने की थान ली, सफेद गुलाब मैनेजर के मेज पर सजाने का योजना भी बनायी। इस बार दस मिनट पहले पहुँची, मेज से मुरझाये गुलाब हटाए और नई खुशबूदार सफेद गुलाब सजा दिए। कुछ देर बाद मैनेजर अन्दर आया, श्रुति ने मुस्कुराकर उनका स्वागत किया। मैनेजर सफेद गुलाब को देखकर रुक गया और सोच में पड़ गया।





श्रुति ने कहा – जी मुझे पता है कि आपको सफेद गुलाब से बहुत लगाव है, इसलिए आज मैंने खुद सजाये है। मैनेजर सिर्फ फूलदान की ओर देखते हुए बोला – सफेद गुलाब को हटाओ, इनके बदले लाल या पीला गुलाब और अच्छा रहेगा। यह सुनकर श्रुति चकित रह गयी और जवाब दिया – मगर सर, ये तो आपके मनपसंद रंग के फूल है।

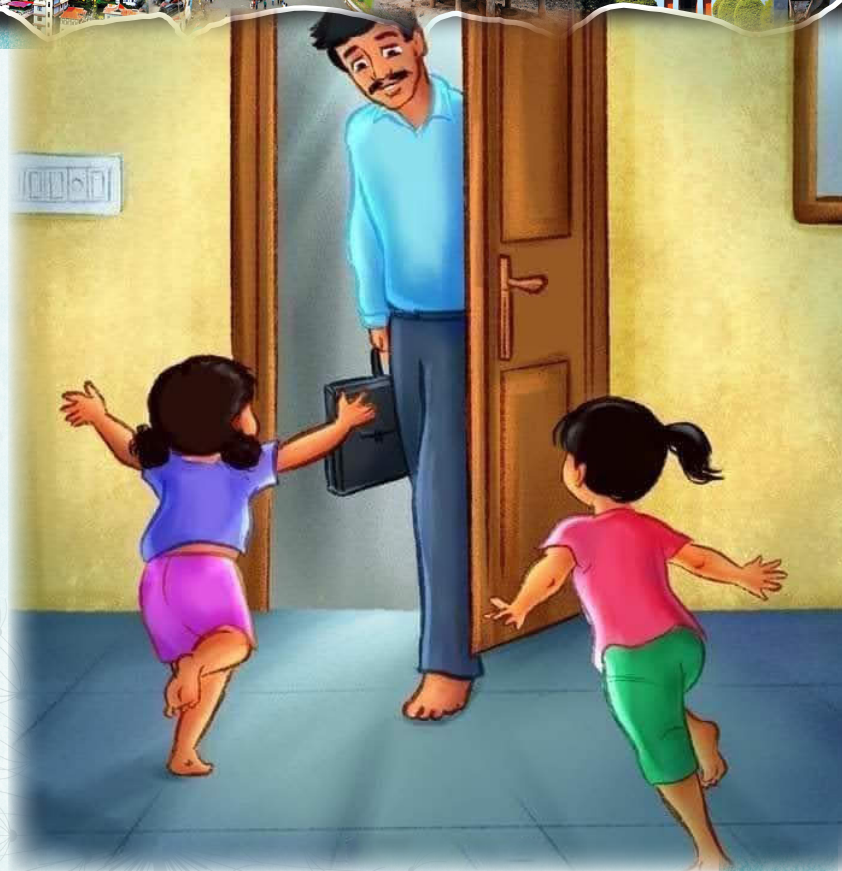
पूरी बात सुने बिना मैनेजर ने उसे आदेश दिया कि सबसे पहले श्रुति को सफेद गुलाब हटाना है। श्रुति और कुछ नहीं कह पायी और वहाँ से बाहर चली आयी। अब उसके मन में अनेक सवाल उठने लगे। वह डरने लगी कि कहीं मैनेजर साहब उससे नाराज तो नहीं। चिन्ता मन में बहुत थी लेकिन वह किसी के साथ भी शेयर नहीं कर पायी। उसे लगा कि सबसे पहले लाल या पीला गुलाब लाना ही बेहतर होगा। इसलिए वह बाहर गयी तथा लाल और पीले रंगों वाले गुलाब लायी। इन्हें मेज पर सजाने के लिए लायी तो शीला वह सब देखके आश्चर्य हो गयी। थोड़ी देर में श्रुति कमरा से बाहर निकल आयी मन में उदासी थी। उसकी परिस्थिति समझकर शीला उसके पास गयी।

शीला – सब ठीक है ? कोई परेशानी ?

श्रुति – मैनेजर साहब को सफेद गुलाब पसन्द नहीं, लाल या पीला ही चाहिए।

शीला – ओह यह तो नई बात हो गई। मैनेजर और सफेद गुलाब की कहानी बताना पड़ेगा। कुछ साल पहले मैनेजर साहब का हँसता-खेलता परिवार होता था। मगर एक दुर्घटना में उनके इकलौती बेटी चल बसी। रोजी नाम था उसका। अपनी बेटी को खोने का गम मैनेजर साहब को दिन-रात सताती। उनके लिए रोजी एक परी जैसी थी। उसकी याद में हर रोज सफेद गुलाब की मांग शुरू हुई, मानो एक बचपना जैसा। सफेद गुलाब बन गया था मैनेजर साहब का जीने का तरीका।

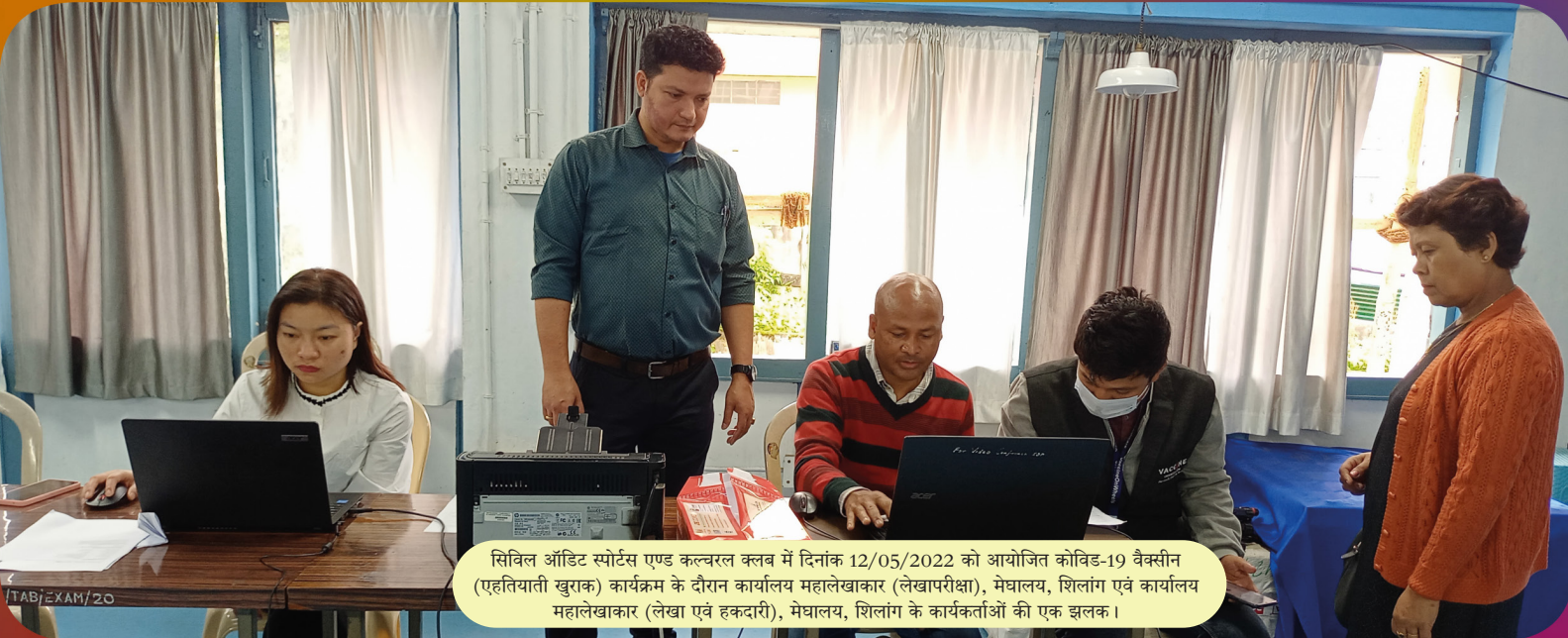
यह बातें सुनकर श्रुति उदास हुई। साथ-साथ एक राहत मिली उसको कि मैनेजर साहब उन पर गुस्सा नहीं थे। थोड़ा समय पश्चात मैनेजर साहब आए और मुस्कुराकर कहा – जिन्दगी के बस पल दो-चार, कल जाना है सभी को, तो आज खुलके सब जी ले, इस खूबसूरत दुनिया का पूरा आनन्द लेना चाहिए। सफेद गुलाब थोड़ा बेरंग लगता है, थोड़ी रंगत, कुछ लाल, कुछ पीला या सुनहरा और अच्छा लगेगा, है



कि नहीं श्रुति ?

यह सब देखकर श्रुति और शीला को संतुष्टि मिली। उन्हें भी समझ आया कि मुश्किलें और दर्द कितने भी गहरे हो, समय सारे घाव ठीक कर सकता है। समय मनुष्य के हृदय में उम्मीद आखिर में जागृत करता है। निराशा जीवन का हिस्सा है लेकिन जीवन का अन्त नहीं।





सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 12/05/2022 को आयोजित कोविड-19 वैक्सीन (एहतियाती खुराक) कार्यक्रम के दौरान कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के कार्यकर्ताओं की एक झलक।



सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 12/05/2022 को आयोजित कोविड-19 वैक्सीन (एहतियाती खुराक) कार्यक्रम के दौरान टीके की खुराक लेते हुए श्री रमेश, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 12/05/2022 को आयोजित कोविड-19 वैक्सीन (एहतियाती खुराक) कार्यक्रम के दौरान श्री करबोरलांग रियाहतम, एम.टी.एस. का रक्त चाप (बी.पी.) जाँच करती हुई चिकित्सा विभाग की कार्यकर्ता।



सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 12/05/2022 को आयोजित कोविड-19 वैक्सीन (एहतियाती खुराक) कार्यक्रम के दौरान दोनों कार्यालयों के कार्यकर्ताओं सहित कोविड-19 टीकाकरण की चिकित्सा विभाग की टीम मध्याह्न भोजन करते हुए।



सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 13/05/2022 को आयोजित कोविड-19 वैक्सीन (एहतियाती खुराक) कार्यक्रम के समापन के उपरांत कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के समूह अधिकारियों सहित कार्यकर्ता एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के कार्यकर्ता और कोविड-19 टीकाकरण की चिकित्सा विभाग की टीम।



सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 13/05/2022 को आयोजित कोविड-19 वैक्सीन (एहतियाती खुराक) कार्यक्रम के दौरान पंजीकरण करती हुई श्रीमती लुसिली एम. वांसवेट, लेखापरीक्षक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 13/05/2022 को आयोजित कोविड-19 वैक्सीन (एहतियाती खुराक) कार्यक्रम के दौरान टीके की खुराक लेती हुई श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।

आज़ादी का
अमृत महोत्सव



सत्यमेव जयते

পূব আৰু পূৰ্বোত্তৰ ক্ষেত্ৰৰ সংযুক্ত ক্ষেত্ৰীয় ৰাজভাষা সন্মিলন
पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन
JOINT REGIONAL OFFICIAL LANGUAGE CONFERENCE
FOR EAST & NORTH-EAST REGIONS

ভাৰত চৰকাৰ, গৃহ মন্ত্ৰালয়, ৰাজভাষা বিভাগ
भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
GOVERNMENT OF INDIA, MINISTRY OF HOME AFFAIRS
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE

ডিব্ৰুগড় ১৮ ডিচেম্বৰ ২০২১

दिनांक : 18 डिसेंबर 2021

18 Dec 2021

दिनांक 18/12/2021 को डिब्रुगढ़ में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर अभिभाषण देते हुये
श्री बदरी यादव, उप निदेशक (प्रभारी) एवं कार्यालय प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र), गुवाहाटी।



सत्यमेव जयते

পূব আৰু পূৰ্বোত্তৰ ক্ষেত্ৰৰ সংযুক্ত ক্ষেত্ৰীয় ৰাজভাষা সন্মিলন
पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन
JOINT REGIONAL OFFICIAL LANGUAGE CONFERENCE
FOR EAST & NORTH-EAST REGIONS

ভাৰত চৰকাৰ, গৃহ মন্ত্ৰালয়, ৰাজভাষা বিভাগ
भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
GOVERNMENT OF INDIA, MINISTRY OF HOME AFFAIRS
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE

दिनांक 18/12/2021 को डिब्रुगढ़ में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर सचिव, राजभाषा
विभाग, गृह मंत्रालय, सुश्री अंशुली आर्या के करकमलों द्वारा शीलड प्रदान करने की एक झलक।

পূব আৰু পূৰ্বোত্তৰ ক্ষেত্ৰৰ সংযুক্ত ক্ষেত্ৰীয় ৰাজভাষা সন্মিলন
पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन
JOINT REGIONAL OFFICIAL LANGUAGE CONFERENCE
FOR EAST & NORTH-EAST REGIONS

ভাৰত চৰকাৰ, গৃহ মন্ত্ৰালয়, ৰাজভাষা বিভাগ
भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग
GOVERNMENT OF INDIA, MINISTRY OF HOME AFFAIRS
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE

दिनांक 18/12/2021 को डिब्रुगढ़ में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर कार्यक्रम के समापन समारोह के पश्चात श्री बदरी यादव, उप निदेशक
(प्रभारी) एवं कार्यालय प्रमुख, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र), गुवाहाटी के साथ अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सामूहिक छायाचित्र की एक झलक।





श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा गणतंत्र दिवस 2022 के अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया।



श्री अथिखो चलाई, महानिदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा गणतंत्र दिवस 2022 के अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया।



गणतंत्र दिवस 2022 के अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराने के पश्चात समूह अधिकारियों द्वारा जलपान करने की एक झलक।

श्री फेडरिक सिएमलेह, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2022 के अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया।

श्री फेडरिक सिएमलेह, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2022 के अवसर पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया।

श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2022 के अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया।

श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2022 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया।



स्वतंत्रता दिवस 2022 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के सभागार हॉल में सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत करने की एक झलक।



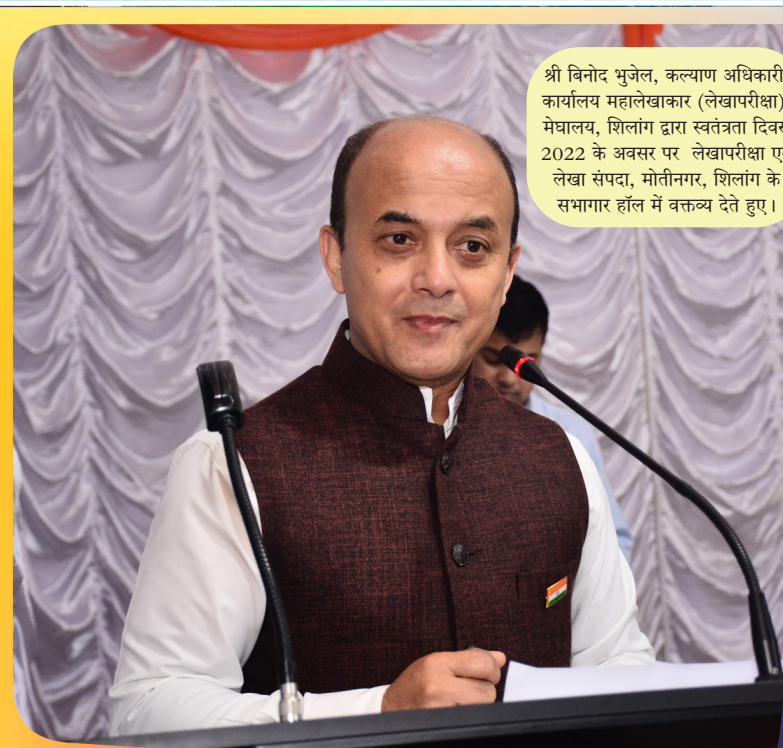
श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग स्वतंत्रता दिवस 2022 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के सभागार हॉल में अभिभाषण देती हुई।



स्वतंत्रता दिवस 2022 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के सभागार हॉल में कार्यक्रम का आनंद लेते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण और कर्मचारीगण एवं उनके परिवार के सदस्य।

श्री विनोद भुजेल, कल्याण अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2022 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के सभागार हॉल में वक्तव्य देते हुए।

स्वतंत्रता दिवस 2022 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के सभागार हॉल में बच्चों द्वारा देशभक्ति नृत्य प्रस्तुत करने की एक झलक।



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग स्वतंत्रता दिवस 2022 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के सभागार हॉल में पुरस्कार प्रदान करती हुई।



स्वतंत्रता दिवस 2022 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के सभागार हॉल में कार्यक्रम के समापन समारोह में राष्ट्र गान प्रस्तुत करते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण और कर्मचारीगण एवं उनके परिवार के सदस्य।



स्वतंत्रता दिवस 2022 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के सभागार हॉल में कार्यक्रम के समापन समारोह में राष्ट्र गान प्रस्तुत करते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण और कर्मचारीगण एवं उनके परिवार के सदस्य।



श्री सागर विजय काळे, उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-१ एवं ३), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग स्वतंत्रता दिवस 2022 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के सभागार हॉल में पुरस्कार प्रदान करते हुए।



गीत नफरत का हमने कभी कोई गाया नहीं



श्री दीपक कुमार

लेखापरीक्षक



ये नहीं कि नाम उसका हमने दोहराया नहीं,
हाँ, पर उसका शोर हमको तो समझ आया नहीं,
वो रियासत कर रहे है जात-मजहब की यहाँ,
जात-मजहब का सबक जिनको कभी आया नहीं,
मुहब्बत के तराने उम्र भर गाते रहे,
गीत नफरत का हमने कभी कोई गाया नहीं।

कैसे सुलझाएँ हम अपनी उलझनों को,
है कोई हल जिसको तुमने खुब उलझाया नहीं,
एक-दो की बात क्या है आपसे मिलकर यहाँ,
कौन सा वो शख्स है जो खुद से इतराया नहीं,
जो थे दौलत के समुन्दर वे ही ये कहते मिले,
एक वैसा भी किसी के साथ जा पाया नहीं।

थी तमाशे की उम्मीद दरिया को मगर,
साहिल ने तो कोई खेल दिखाया नहीं।



श्री सुमित दास

पुत्र - श्री सुजीत कुमार दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक पल भी गवां

सुश्री साधना कुमारी

बहन - श्री दीपक कुमार
लेखापरीक्षक

रिमझिम बरस रहा है पानी

छम-छम करती हँसती-गाती,
नभ से उतरी बरखा रानी।

भीनी-भीनी मधुर फुहारें,
ठण्डी-ठण्डी जल की धारे,
हरी दूब फिर मचल रही है,
ज्यों धरती का आँचल धानी।

बिजली कहो, कहाँ से आती,
नभ में कौन परी है गाती,
रंग-रंगोली परीकथाएँ,
सुना रही हैं प्यारी नानी।

भीगे पौधे, सड़कें, गलियाँ,
बागों में चटकी हैं कलियाँ,
मम्मी, हम खेलेंगे बाहर,
रिमझिम बरस रहा हैं पानी।

खुद को अगर आजमा नहीं सकते,
तय है, मंजिल भी पा नहीं सकते,
जानते हैं जो वक्त की कीमत,
एक पल भी गवां नहीं सकते।

हमको ही बख्श देंगे ये नेमत,
पेड़ फल तो खुद खा नहीं सकते,
कितनी मतलब परस्त है दुनिया,
आपको कुछ बता नहीं सकते।

इस तरह तो हमें न भटकाओं,
राह अगर तुम दिखा नहीं सकते,
फिर तो उम्मीद छोड़ दे सुख की,
दुख अगर कुछ उठा नहीं सकते।

जिनका संवेदना से रिश्ता है,
दिल किसी का दुःख नहीं सकते,
एक मजलूम की आवाज को,
आप यूँ दबा नहीं सकते।

"हिंदी और नागरी का प्रचार तथा विकास कोई भी रोक नहीं सकता।" - गोविन्दवल्लभ पंत

पूर्वांश, अंक-31, वर्ष : 2021-2022



औरत के हिस्से में इतवार नहीं आती



मुहम्मद अरिफुल हक

भाई - मुहम्मद जियाऊल हक
वरिष्ठ अनुवादक



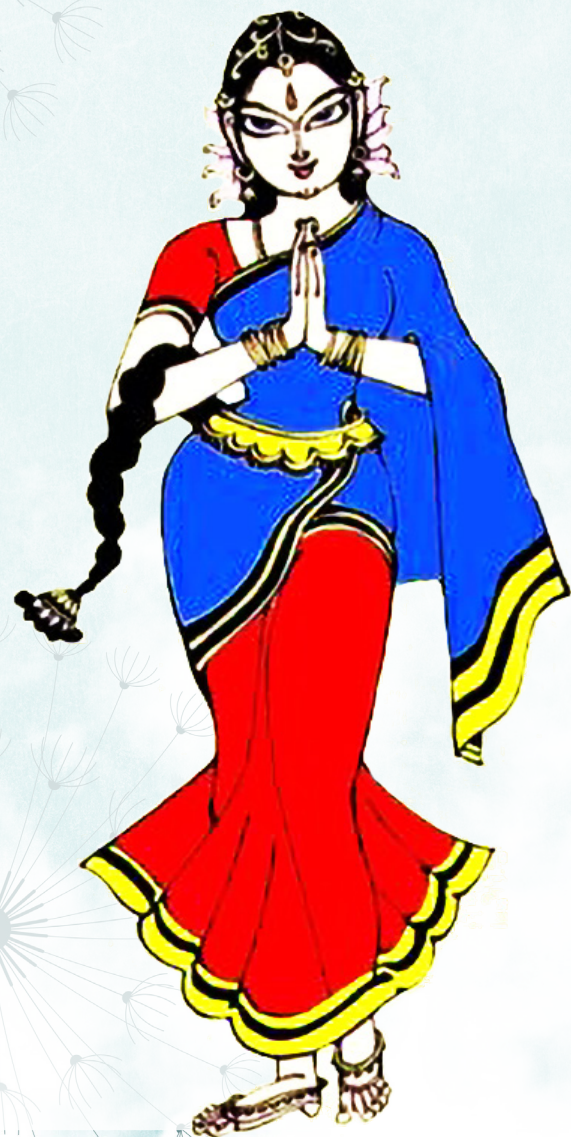
छुट्टी तो आती है पर कोई आराम नहीं आती,
क्यों औरत के हिस्से में उसका इतवार नहीं आती।

देखो-देखो सुबह हो गई, सरपट-सरपट भाग रही,
सब तेरा ही तो है पगली, ये सोच-सोच के नाच रही,
फिर भी कोई चूक हुई, तो सुनती काम नहीं आती,
क्यों औरत के हिस्से में उसका इतवार नहीं आती।

एक अकेली नारी यहां पर, जाने क्या-क्या काम करें,
उसका कुछ भुगतान करो तो शायद तुमको पता चले,
घर की स्त्री को साहब, कोई व्यापार नहीं आती,
क्यों औरत के हिस्से में उसका इतवार नहीं आती।

सोती है वो आखिर में और सबसे पहले जागती है,
होती है वो पीड़ा में, फिर भी देखो हँसती है,
उसकी ही इच्छाओं का, क्यों तुमको ध्यान नहीं आती,
क्यों औरत के हिस्से में उसका इतवार नहीं आती।

सीख - एक घरेलू औरत की जिन्दगी देखने में जितनी आसान लगती
हैं, उतनी होती नहीं। हमें उनकी योगदान को हमेशा सराहना चाहिए
तथा उन्हें परिवार में आदर और इज्जत देना चाहिए।





जमीन पर जन्नत



श्री सुजीत कुमार दास

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

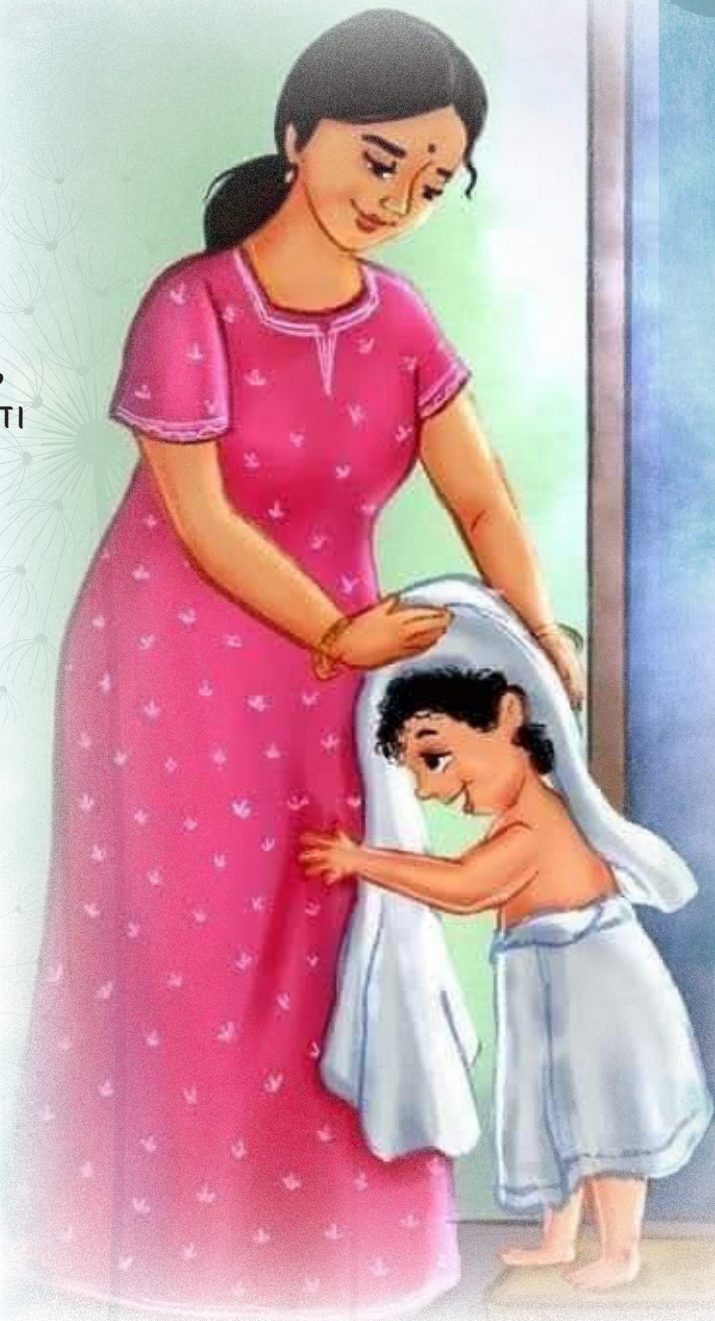
जमीन पर जन्नत मिलती है कहाँ,
दोस्तों ध्यान से देखा करो अपनी माँ को,
जोड़ लेना चाहे लाखों-करोड़ों की दौलत,
पर जोड़ न पाओगे कभी माँ सी सुविधा।

आते हैं हर रोज फरिश्ते उस दरवाजे पर,
रहती है खुशी से प्यारी माँएँ जहाँ-जहाँ,
छिन लाती है अपनी औलाद की खातिर खुशियाँ,
कभी खाली नहीं जाती माँ के मुँह से निकली दुआ।

वो लोग कभी हासिल नहीं कर सकते कामयाबी,
जो बात-बात पर माँ की ममता में ढूँढ़ते हैं कमियाँ,
माँ को बहुत बड़े से बड़ा मंदिर सजाने का,
माँ सुंदर दुनिया में नहीं होती कोई भी प्रतिमा।

माँ का साथ यूँ चलता है ताउम्र आदमी के संग,
जैसे कदमों तले झुका रहता हो सदा आसमाँ,
माँ में दिखती तो है वाहार सदा,
पर माँ है रुह में गौपद बेपनाह होसला।

कभी गलती से भी बुरा न सोचना माँ के बारे में,
ध्यान रहे माँ ने ही रचा हर जीवन का घोंसला,
मर कर भी बसी रहती है माँ धरती पर ही आजीवन,
कभी नहीं होता औलाद की खातिर उसके प्रेम का खात्मा।





पर्यावरण संरक्षण



श्री अमित कुमार वर्मण

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आओ दुनिया की शैर कर हम,
बातों की इस खेल में,
दुनिया को हम स्वर्ग बनाएँ,
खेल-खेल में खेल-खेल में।

पहला वादा बूँद-बूँद कर तेल बचाएँ-तेल बचाएँ,
दूजा वादा पेड़ों पर हम फूल खिलाएँ,
ऊर्जा देती जीवन हमको,
जीवन नहीं गवाना है।

खोल के हमें हर पिंजड़े को,
हर पक्षी को उड़ाना है,
जगमग चहचहाते पक्षी को उड़ाते है,
मातृभूमि की रक्षा में।

संरक्षण का दीप जलाते है,
आँखों में है ख्याब अनेक,
इन बच्चों की रेल में,
दुनिया को हम स्वर्ग बनाएँ,
खेल-खेल में, खेल-खेल में।



एक कविता मेरे देश के नाम

पूर्वजों और पिता से आती हुई,
एक लहर इतिहास से वर्तमान तक,
एक गाथा हमारे महान भारत की,
यह गाथा है हमारे राजकुमार, राजकुमारी
निडर महाराजा जो सब ये देशभक्ति का स्वरूप।

श्रीमती एल. थिएते

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कई पीढ़ी की बदलाव से राग बदला नहीं,
वही धरती, वही महक, वही लगन,
जहाँ धरती मिट्टी नहीं माँ है,
जहाँ रंगत केवल बाहारों में नहीं,
बैसाखी और होली त्यौहार नहीं,
ये बने हमारे सच्ची प्रतिबिंब।

न धर्म, न जाती, न हैसियत था निर्धारक,
जहाँ सबसे धर्म और कर्म इंसानियत है,
यही हैं मेरा स्वतंत्र भारत का सही दर्पण,
प्रगति और उन्नति हवा का झोंका न हो,
जो आए और जाए अस्थिर हमेशा,
विलास और समृद्धि की चाह कही हम,
सबको अंधा न बना दे।

चाँद, सूरज और धरती-माँ है वहीं,
युवक मनुष्य जाति प्रेम के साथ,
देश प्रेम का पाठ भी सीखों,
स्वतंत्रता को एक दिवस में सीमित न करो।

स्वतंत्र है हम, स्वतंत्रता की कीमत पहचानो,
क्यों मन में है रोका,
कि मेरा देश है महान ?
मेरा देश महान था और अब,
हम सब देश को और महान बनायेंगे।

मीडिया

श्री सुखदेव प्रसाद साव

पिता - श्री सोनु कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

लगभग कहूँ तो आज,
मीडिया या टी.वी. साहित्य की,
बन चुकी है एक विद्या,
समझना आसान नहीं।

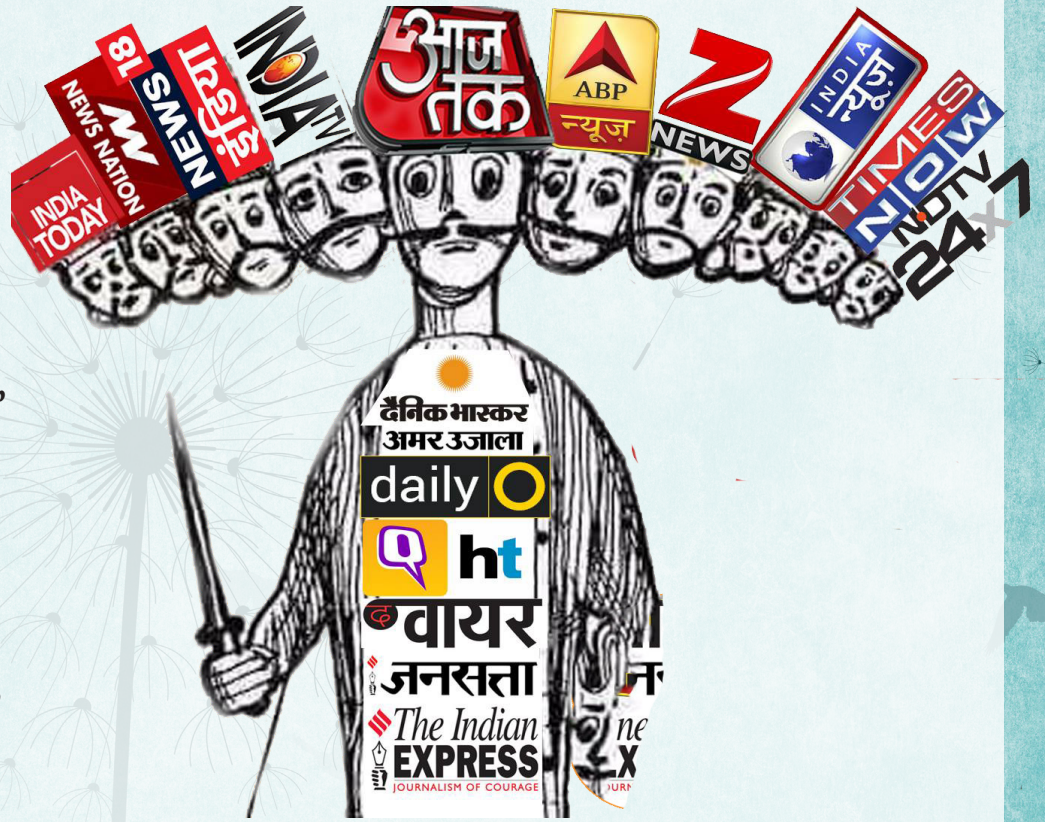
फिर भी कहूँ तो यह कि,
जिस प्रकार एक व्यथा,
तैयार है कहानी या महापाठ में,
या सर्जन होता है उसका।

कविता आपके माध्यम से,
गद्य या पद्य में जो भी,
व्यथा में रोता है किसान,
बूढ़ी बीमार माँ, सताए गए लोग।

आदिवासी, माओवादी,
अर्थहीन, बुद्धिहीन, नामहीन तबके के जमात,
इस देश में या उस देश में,
यह अधिकांश दिखाई पड़ता है।

वह रूप दिखाई पड़ता है,
यह सब दिखाई पड़ता है,
आज भी, अब भी साहित्य में,
मीडिया में, मन में।

और यहाँ तक कि लगभग,
प्रत्येक में,
यह तय है,
साहित्य का दूसरा रूप एवं पाठ है मीडिया।





बाजारू

मैं, बड़ा कवि होना चाहता हूँ,
मैं लिखूंगा व्यवस्थाओं के खिलाफ,
खिलाफ होना ही तो पहचान है।

मैं लिखूंगा संवेदनाओं पर,
वे संवेदनाएं जो पसरती हैं,
अखबारों और रंगीन चमकीली स्क्रीनों से जेहन में,
क्योंकि मैं, जानता हूँ,
संवेदनाओं का बाजारीकरण करना,
मैं, अवसर तलाशता हूँ,
हर घटना दुर्घटना में,
ताकि बेच सकूँ अपनी कविता।

मैं, सब कुछ बेचूंगा,
हर एक वो विचारधारा,
जी बिकने को है तैयार,
और जिसके ग्राहक हैं,
उन सबको बेचूंगा मैं अपनी कविता।

मैं, गाली दूंगा, मंच से अपनी कविता में,
उन सब समर्थों को जो मेरे कद से बड़े हैं,
भीड़ तालियां मारेगी और किलकारियां भी,
वो चाहती है अपनी भावनाओं का प्रदर्शन,
या कुंठा का, मेरे लिखे कहे तीरों से।

मैं, रिश्तों की कविता बेचूंगा,
क्योंकि हर कोई इसका खरीददार है,
मैं, बताऊंगा तुम्हारी माँ तुम्हें कितना चाहती है,
मैं, बताऊंगा तुम्हारे पिता का संघर्ष,
तुम्हारे परिवार को सहेजने में,
मैं बताऊंगा तुम्हें,
समर्पण तुम्हारी अर्द्धांगिनी का,
बस तुम्हें खरीदनी होगी मेरी कविता।

मैं, बेतहाशा प्रेम बेचूंगा,
हर एक कि जरूरत जो है,
प्रेम की दुकानों पर बड़ी भीड़ देखी है मैंने।

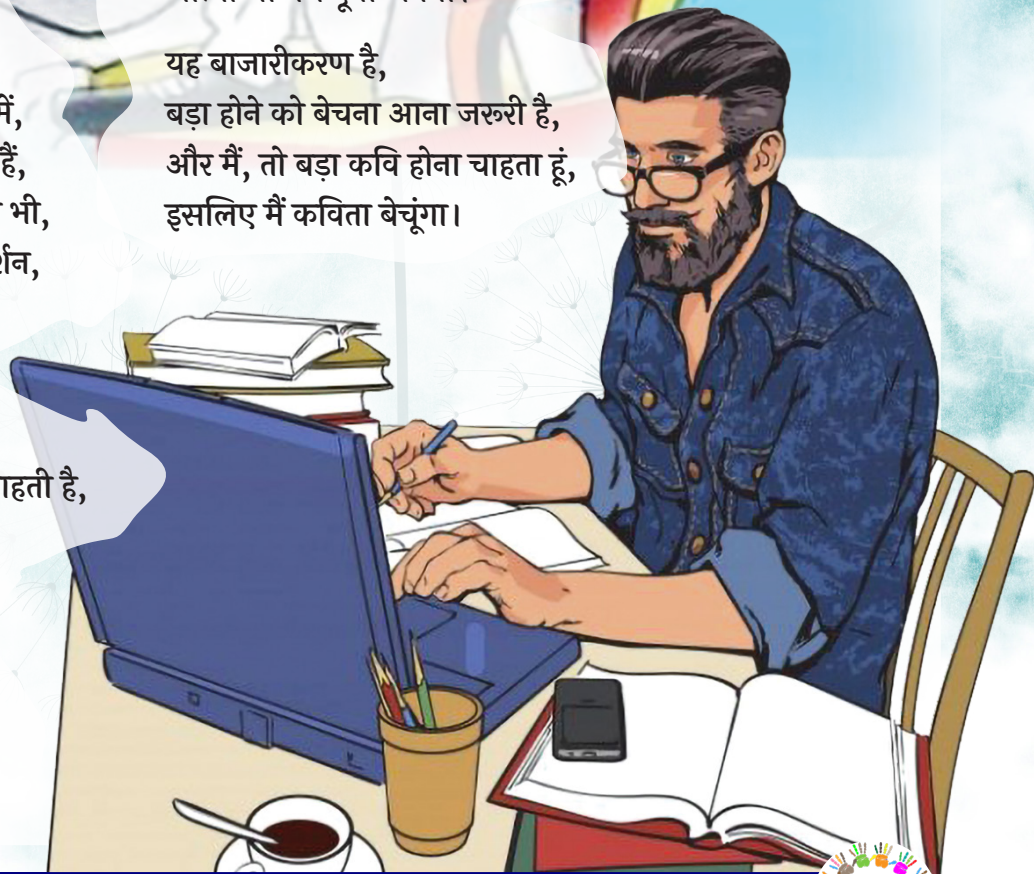
मैं, बलात्कारों की चीख बेचूंगा,
तरस खाने लायक गरीबी बेचूंगा,
मैं, धड़ल्ले से मानवीय संवेदनाएं बेचूंगा,
और अगर कोई बड़ा मोल मिला तो,
आत्मा भी बेच दूंगा अपनी।

यह बाजारीकरण है,
बड़ा होने को बेचना आना जरूरी है,
और मैं, तो बड़ा कवि होना चाहता हूँ,
इसलिए मैं कविता बेचूंगा।



श्री पवन कुमार

भाई - श्री विनोद कुमार
हिन्दी प्राध्यापक
हिन्दी शिक्षण योजना, शिलांग





आई.ए. एंड ए.एस. अधिकारी प्रशिक्षुओं का भारत दर्शन सह अध्ययन दौरा (बैच 2020) के लिए दिनांक 01-12-2021 को होटल पाइनवुड में आयोजित समारोह में कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए अधिकारीगण।



आई.ए. एंड ए.एस. अधिकारी प्रशिक्षुओं का भारत दर्शन सह अध्ययन दौरा (बैच 2020) के लिए दिनांक 01-12-2021 को होटल पाइनवुड में आयोजित समारोह में प्रशिक्षुओं को संबोधित करती एवं शाल ओढ़ाती हुई श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



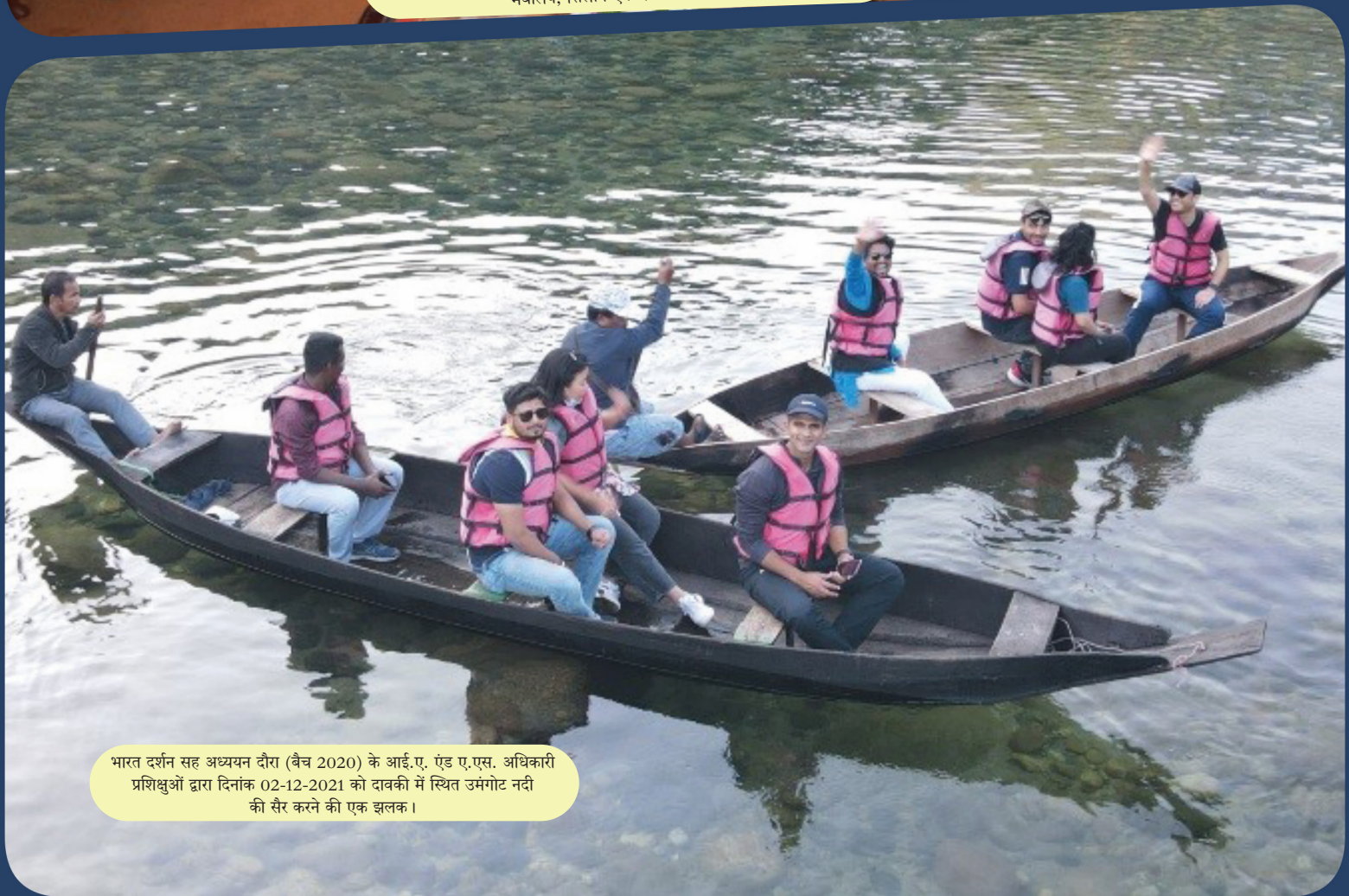
आई.ए. एंड ए.एस. अधिकारी प्रशिक्षुओं का भारत दर्शन सह अध्ययन दौरा (बैच 2020) के लिए दिनांक 01-12-2021 को होटल पाइनवुड में आयोजित संगीत कार्यक्रम की एक झलक।



आई.ए. एंड ए.एस. अधिकारी प्रशिक्षुओं का भारत दर्शन सह अध्ययन दौरा (बैच 2020) के लिए दिनांक 01-12-2021 को होटल पाइनवुड में आयोजित समारोह के समापन के पश्चात प्रशिक्षुओं के साथ लिया गया समूह छायाचित्र।



दिनांक 03-12- 2021 को मेघालय के राजभवन में माननीय राज्यपाल, श्री सत्य पाल मलिक के साथ श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग एवं अन्य अधिकारीगण।



भारत दर्शन सह अध्ययन दौरा (बैच 2020) के आई.ए. एंड ए.एस. अधिकारी प्रशिक्षुओं द्वारा दिनांक 02-12-2021 को दावकी में स्थित उमंगोट नदी की सैर करने की एक झलक।



सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक : 12-08-2022 को आयोजित श्री मलूक सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक (सेवानिवृत्त), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह में उपस्थित अधिकारीगण और कर्मचारीगण एवं श्री मलूक सिंह के परिवार के सदस्य।



सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक : 01-04-2022 को आयोजित आई.ए. एण्ड ए.डी. ईस्ट जोन फुटबॉल टूर्नामेंट 2022 के संबंध में कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग और कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के खिलाड़ियों को संबोधित करती हुई श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक : 12-08-2022 को आयोजित श्री मलूक सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षक (सेवानिवृत्त), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के विदाई समारोह की एक झलक।

वर्ष 2021 के हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता

दिनांक 16-09-2021 से 22-09-2021 तक हिन्दी पखवाड़ा के दौरान इस कार्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसके परिणाम निम्नलिखित हैं -

दिनांक 16-09-2021 को आयोजित अंत्याक्षरी प्रतियोगिता के विजेतागण निम्नवत् हैं -

क्रम संख्या	नाम एवं पदनाम	स्थान	राशि (रु.)
1	श्रीमती प्रणिता मारक, डाटा एण्ट्री ऑपरेटर श्री प्रयाग सिंह, डाटा एण्ट्री ऑपरेटर	प्रथम	1,000/-
2	श्री सुरेन्द्र कुमार, आशुलिपिक श्री गौतम वर्मा, डाटा एण्ट्री ऑपरेटर	द्वितीय	700/-
3	श्री सुरज कुमार, डाटा एण्ट्री ऑपरेटर श्री विजय दहिया, डाटा एण्ट्री ऑपरेटर	तृतीय	500/-

दिनांक 17-09-2021 को हिन्दी भाषी हेतु आयोजित अनुवाद प्रतियोगिता के विजेतागण निम्नवत् हैं -

क्रम संख्या	नाम एवं पदनाम	स्थान	राशि (रु.)
1	श्री सुरज कुमार, डाटा एण्ट्री ऑपरेटर	प्रथम	1,000/-
2	श्री दीपक कुमार, एम.टी.एस.	द्वितीय	700/-
3	श्री विजय दहिया, डाटा एण्ट्री ऑपरेटर	तृतीय	500/-

दिनांक 17-09-2021 को हिन्दीतर भाषी हेतु आयोजित अनुवाद प्रतियोगिता के विजेतागण निम्नवत् हैं -

क्रम संख्या	नाम एवं पदनाम	स्थान	राशि (रु.)
1	श्री वेंकाटेश जिनुकाला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	प्रथम	1,000/-
2	श्रीमती वांडालिन ख्रिएम, सहायक लेखा अधिकारी	द्वितीय	700/-
3	श्रीमती माधवी देब, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	तृतीय	500/-

दिनांक 20-09-2021 को आयोजित हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता के विजेतागण निम्नवत् हैं -

क्रम संख्या	नाम एवं पदनाम	स्थान	राशि (रु.)
1	श्री मनिष कुमार-I, लेखाकार	प्रथम	1,000/-
2	श्रीमती मंजिता रॉय चौधुरी, सहायक लेखा अधिकारी	द्वितीय	700/-
3	श्री मिथिलेश कुमार, डाटा एण्ट्री ऑपरेटर	तृतीय	500/-

दिनांक 22-09-2021 को आयोजित हिन्दी श्रुतलेख प्रतियोगिता के विजेतागण निम्नवत् हैं -

क्रम संख्या	नाम एवं पदनाम	स्थान	राशि (रु.)
1	श्री वेंकाटेश जिनुकाला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	प्रथम	1,000/-
2	सुश्री ग्रेसी हलु वैफेई, डाटा एण्ट्री ऑपरेटर	द्वितीय	700/-
3	श्रीमती माधवी देब, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	तृतीय	500/-

"दाहिनी हो पूर्ण करती है अभिलाषा पूज्य हिंदी भाषा हंसवाहिनी का अवतार है।" - अज्ञात

पूर्वांश, अंक-31, वर्ष : 2021-2022





हिन्दी दिवस 2021 : एक संक्षिप्त विवरण

हिन्दी कक्ष (लेखापरीक्षा)

वर्तमान कोविड-19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में केन्द्र/राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए दिशा-निर्देशों एवं मानक प्रचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी.) को ध्यान में रखते हुए तीनों कार्यालयों के केवल समूह अधिकारियों, शाखा अधिकारियों, हिन्दी कक्ष के अधिकारी तथा कर्मचारीगण तथा कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शिलांग के ई-पत्रिका के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों के विजेताओं को सम्मिलित (कुल 30 अधिकारी एवं कर्मचारीगण को शामिल) करते हुए एवं सामाजिक दूरी को ध्यान में रखते हुए क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग और कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से गत 14 सितम्बर, 2021 को कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में समयावधि के लिए हिन्दी दिवस मनाया गया।



हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर श्री बिनोद भुजेल, कल्याण अधिकारी ने अपने स्वागत भाषण में उपस्थित तीनों कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने भाषण में राजभाषा से संबंधित विविध जानकारियाँ भी दी तथा कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने की अपील की। इसके अलावा उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि सम्पूर्ण राष्ट्र को एक कड़ी में पिरोये रखने में हिन्दी भाषा की एक अहम भूमिका है। इस भाषा के जरिये हम एक दूसरे की भावनाओं को भली-भाँति समझ सकते हैं, अर्थात् दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि यह भाषा सेतु का कार्य करती है। इसके अलावा उन्होंने यह भी कहा कि हमें हिन्दी के कठिन शब्दों के बजाए सहज-सरल शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, साथ ही हम अंग्रेजी के शब्दों को लिप्यांतरण के रूप में भी प्रयोग कर सकते हैं। इस अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिन्दी

ई-पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश” के 16वें अंक का विमोचन महानिदेशक द्वारा डिजिटल रूप में किया गया। प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हिन्दी दिवस के अवसर पर गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रेषित संदेश का कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के वरिष्ठ अनुवादक, मुहम्मद जियाऊल हक द्वारा वाचन किया गया। श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली, कनिष्ठ अनुवादक के माध्यम से राजभाषा विभाग द्वारा जारी राजभाषा प्रतिज्ञा सभा में उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा ली गई। इस अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक ई-पत्रिका “नवीन पूर्वाचल संदेश” के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के लिए नगद राशि एवं प्रमाण-पत्र श्री फ्रेडरिक सिएमले, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शिलांग के करकमलों द्वारा प्रदान किए गए।

इसके अलावा कार्यालय लेखापरीक्षा और लेखा एवं हकदारी की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 2020 अर्थात् “पूर्वाशा” और “नवीन पूर्वाचल संदेश” के संबंध में आई.ए. एंड ए.डी. कार्यालयों से प्राप्त फीडबैक के आधार पर सबसे सराहनीय पुरस्कार के लिए क्रमशः मुहम्मद जियाऊल हक, वरिष्ठ अनुवादक तथा श्रीमती शालिनी दहिया, कनिष्ठ अनुवादक को श्री बिनोद भुजेल, कल्याण अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग और श्री बेंजामिन करुणाकरण, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शिलांग के करकमलों द्वारा प्रदान किए गए। अन्ततः इस वर्ष के हिन्दी दिवस कार्यक्रम का समापन समारोह कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के वरिष्ठ लेखा अधिकारी, श्री आनन्द कौशल के धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ किया गया।



हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह 2021 : एक संक्षिप्त विवरण

हिन्दी कक्ष (लेखापरीक्षा)

वर्तमान कोविड-19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में केन्द्र/राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए दिशा-निर्देशों एवं मानक प्रचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी.) को ध्यान में रखते हुए तीनों कार्यालयों के केवल समूह अधिकारियों, शाखा अधिकारियों, हिन्दी कक्ष के अधिकारी तथा कर्मचारीगण तथा तीनों कार्यालयों के विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं (कुल 50 अधिकारी एवं कर्मचारीगण) को सम्मिलित करते हुए एवं सामाजिक दूरी को ध्यान में रखते हुए क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग और कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 27 सितम्बर, 2021 को कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में निश्चित समयावधि के लिए हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह मनाया गया।

हिन्दी पखवाड़ा के समापन समारोह के शुभ अवसर पर श्री सागर काले, उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग ने अपने स्वागत भाषण में उपस्थित तीनों कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में राजभाषा से संबंधित विविध जानकारी दी तथा कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने की अपील की। उन्होंने अवगत कराया कि हिन्दी पखवाड़े के आयोजन का मुख्य उद्देश्य गैर-हिन्दी भाषी कार्मिकों को हिन्दी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हिन्दी भाषा में दक्ष बनाना है। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के पुरस्कार एवं प्रोत्साहन राशियाँ प्रदान की जाती हैं, जिनसे उन्हें हिन्दी में काम करने की प्रेरणा मिलती है। इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने से कार्मिकों का

हिन्दी में काम करने के प्रति आत्मविश्वास भी उत्पन्न होता है। माननीय प्रधान मंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह (12) 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसके महत्वपूर्ण स्तंभ हैं – प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह (12) 'प्र' रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिन्दी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है। अतः राजभाषा विभाग द्वारा बताए गए बारह (12) 'प्र' के महत्वपूर्ण स्तंभों के आधार पर सभी कार्मिक सरकारी कार्य को सरल एवं सहज हिन्दी में करने का प्रयास करेंगे। इस अवसर पर विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं जैसे, अंताक्षरी प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिन्दी निबंध लेखन एवं श्रुतलेखन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के लिए नगद राशि क्रमशः ₹.1,000/-, ₹.700/- और ₹.500/- एवं प्रमाण-पत्र समूह अधिकारियों के करकमलों द्वारा प्रदान किए गए। इसके अलावा उपरोक्त वर्णित विभिन्न प्रतियोगिताओं के शेष प्रतिभागियों को भी समूह अधिकारियों के करकमलों द्वारा सांत्वना पुरस्कार के रूप में नगद राशि ₹.200/- प्रदान किए गए। इस अवसर पर प्रश्नोत्तरी और आशु भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया एवं विजेताओं को नगद पुरस्कार प्रदान किए गए। अन्ततः इस वर्ष के हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम का समापन कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग के स्थापना अधिकारी, श्री पारभा रॉय रिग्ग्लेम के धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ किया गया।





दिन-प्रतिदिन के कार्य निर्वहन में प्रचलित वाक्यांश

1	पूर्वोक्त	Aforesaid
2	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए	Action may be taken as proposed
3	हितभागी, लाभार्थी	Beneficiary
4	बुनियादी प्रशिक्षण	Basic Training
5	संवर्ग	Cadre
6	जाँच, पड़ताल	Check
7	प्रतिनियुक्ति	Deputation
8	दस्तावेज	Document
9	प्रवेश अनुज्ञा	Entry Permit
10	मूल्यांकन	Evaluation
11	अनुवर्ती कार्रवाई	Follow-up action
12	अग्रेषण पत्र	Forwarding letter
13	सामान्य सभा, साधारण बैठक	General meeting
14	राजपत्रित	Gazetted
15	अर्ध वेतन छुट्टी	Half pay leave
16	हिन्दी शिक्षण योजना	Hindi Teaching Scheme
17	आयकर	Income Tax
18	आज जारी करें	Issue today
19	कार्यग्रहण/कार्यरम्भ तारीख	Joining date
20	तर्कसंगति, औचित्य	Justification
21	अभिलेखपाल	Keeper of records
22	कुंजी पटल	Key-board
23	सम्पर्क अधिकारी	Liaison Officer
24	पुस्तकालय	Library
25	पुस्तिका, नियमावली	Manual
26	पत्रिका	Magazine
27	नामिती, नामित व्यक्ति	Nominee
28	टिप्पणी	Note
29	विकल्प	Option



इस कार्यालय से सेवा निवृत्त एवं स्वर्गीय कर्मचारियों का विवरण (सितम्बर 2021 से अगस्त 2022 तक)



श्री एंथोनी लिंगडोह थॉब्रोई
पर्यवेक्षक
सेवा विवृति तिथि : 03-01-2022



श्रीमती यूरी बेल रॉय
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
सेवा विवृति तिथि : 31-03-2022



श्री मालूक सिंह
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
सेवा विवृति तिथि : 30-06-2022



सुश्री वेंनिशिया डॉली मावरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सेवा विवृति तिथि : 31-08-2022



श्री नीलोत्पल दत्ता चौधरी
सहायक पर्यवेक्षक
सेवा विवृति तिथि : 31-08-2022

“पूर्वाशा” परिवार उपरोक्त सेवानिवृत्त कर्मचारियों के स्वस्थ, सक्रिय एवं दीर्घायु जीवन की तहे दिल से मंगल कामना करता है।

— सम्पादक मण्डल



स्वर्गीय नेत्र बहादुर थापा

एम.टी.एस.

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग.
जीवनावधि : 02/03/1967 – 21/05/2022



उपरोक्त कर्मचारी के असा-
मयिक निधन पर “पूर्वाशा”
परिवार उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित
करता है।

— सम्पादक मण्डल





सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 23-03-2022 को आयोजित "आई.पी.ए.आई. की भूमिका और कार्य एवं उत्तर-पूर्व में इसके पदचिह्नों को बढ़ाने के तरीके" विषय पर संबोधित करते हुए डॉ. सुभाष चंद्र पांडे (भूतपूर्व आई.ए. एण्ड ए.एस.), अध्यक्ष, आई.पी.ए.आई., नई दिल्ली।



सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 23-03-2022 को आयोजित "आई.पी.ए.आई. की भूमिका और कार्य एवं उत्तर-पूर्व में इसके पदचिह्नों को बढ़ाने के तरीके" विषय पर वक्तव्य को सुनते हुए अधिकारीगण।



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, दिनांक 23-03-2022 को डॉ. सुभाष चंद्र पांडे (भूतपूर्व आई.ए. एण्ड ए.एस.), अध्यक्ष, आई.पी.ए.आई., नई दिल्ली से वार्तालाप करती हुई।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

© कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
मेघालय, शिलांग - 793 001.

www.agaumeghalya@cag.gov.in